

ASHA ARCHIVES

1.604

समाचर्य ॥ ततः कर्त्तव्यं निष्ठाया विना वा द्यैव परमं यत् ॥ ततः पीठं समस्तं नव
 भाकि समन्वितं ॥ आवां सुदेवता नवमूला मंदारं यत्कुमा ॥ देवा प्रान्तिस्तु पा
 नदी ॥ अक्षकं ॥ नववर्कं वृविनास्य मर्कं न्यासी विष्णु यवरा पाद्याद्युचि मती यानि
 मधुपर्कं च मन्त्रथा ॥ ॥ पूज्यं गे ॥ अदकं मानं श्रीसालिग्रामं नवच ॥ नवकुण्डलं
 कमानं का वयित्वा तु रुकि न ॥ वागनां नवमूला दीनि ॥ पूज्यं कमानि ॥ मरु
 वृषदी प्रच दत्वा देवी विविक्तये ॥ अष्टमूर्त्ति प्रदये थं ननु द्विजान् पूर्वकं ॥
 वृत्तं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॥ विष्णुवाद्यो मने नवमगी मूर्त्ति नव ॥ महा मभि
 म पूज्या श्रीं सुखये ह्य कालिका ॥ पथमं नववकुलि ततः ॥ सुलि परमं ॥

डाद्युचं च मन्त्रार्चं ॥ पवित्रा नार्चनं नगशा कालम लक्ष्मि चर्कं ॥ कालसंहरक
 रक ॥ कालाग्निं नवचर्कं ॥ कालिका वा मर्त्तु न ॥ अष्टमूर्त्ति चर्कं श्रीं श्रीं श्रीं
 तिसदृशिक ॥ ॥ लोहकं च नवचर्कं ॥ तान् पर्वतं च चर्कं ॥ निषिको लोवा लको
 लः वद्वि को लो चर्कं ॥ चर्कं पुर्वं च मर्त्तु ॥ तिस्रं चर्कं चर्कं चर्कं चर्कं चर्कं चर्कं चर्कं
 उयागि न्य काटि यागि न्य वच ॥ मरु पर्वतं यागि न्य ॥ पुर्वं काली समप्रता ॥ व
 द्वा लु रंदकं चर्कं चर्कं यागि न्य ॥ अष्टमूर्त्ति ॥ कालसंमो हने चर्कं पुर्वं चर्कं यागि न्य
 गलः ॥ कालसंमो हने चर्कं मर्त्तु यागि न्य गलः ॥ कालविद्रावने चर्कं च

खंडयागिनी गल ॥ कोसम एक दचकुं यामि न्याखलु विक्रमा ॥ काली सहाव
कचकुं वला लु यामिनी गल ॥ काला निरुवचकुं कोठिया निन्य आहिना ॥
कालिका पंडुवचकुं पुचलु सां महायुवा ॥ चका एक निवा सिनी यामि न्याय
रविक्रमा ॥ गुह्य का स्या प्रसादार्थं पूरुनी या यथा कुमः ॥ वलु कानक चामूंठा
चलु ली चलु विक्रमा ॥ चलु गं चविको चलु पुचलु अक नायिका ॥ नरु
दाव नल सा सा पूरु चका विद वना ॥ धनू या निवलि गं वं ठम रूं मूं ठ ॥ वल ॥
कपा रूं वल को वं ललि हा नी हकी न ध ॥ पु रूं व न ल म के का मू डी सै द म

यंकु मा ॥ ७ ॥ विशला एक मा वसु वे दवा नै य द र्च नः ॥ सहा न कु म प डे वा या
मी न्दे न पा श्रित ॥ विन्द मा नु य ॥ ला ना सुष्टि पूरु ति गी य न ॥ ना क स ॥ ४४
सां व के ॥ ४ ॥ सिद्धि र्ज च वृ पिर सा ग ले ॥ ४ ॥ जो रु प ति ॥ ४ ॥ स ल की के ॥ ४ ॥ दू ति गे य ॥ ४ ॥ स ग कि ति ॥ ४ ॥
चलु पुचलु मा ले लु गि खं ठा खलु वला लु को ठि म हा पुचलु यामि नी पाद का र्था
न म ॥ ४ ॥ ० ॥ वा व न ल म र्थ ॥ पु न दू पं पु द ग य ॥ पु न दी पा न स म हा र्थ म हा न
वै र्थ स म प र्थ ॥ ० ॥ न न ॥ स व म सा गं कु ल म स च प धि म ॥ पं व को र्म स वि द्वा र्थ
लिखि त्वा म्मा मू डी या ॥ षू पि ना नि म हा वृ प ॥ वृ ट् पा ग र्थ ॥ पु र्थ ॥ ० ॥ कृ ठं म दि स म

यद्यु पाठं ह्यलिमाचनं ७॥ दिग्वलिचं पुनर्दत्तं दद्यात्कवलं पुनश्च न तासां गवलि
 न्दत्तं ७॥ समस्तं ह्यलिमाचनं ८॥ समस्तं ह्यलिमाचनं ९॥ किलिकिना मुक्ता १०॥ पञ्च
 पञ्चवलिदत्तं दत्तं न कवलं पुनश्च ११॥ तत्राथ महिषी मातृमया हस्तिमग्नमस्वी ॥ नृका म
 का समस्तं वा वलिदत्तं विचक्रल १२॥ रुद्रवा ह्यलिमाचनं १३॥ यागिन्या ह्यलिमाचनं १४॥ नता मातृव
 लिदत्तं बटवती वलिमाचनं १५॥ वीरगुह्य वलिदत्तं हीमता मुवलि न तश्च १६॥ सामान्या ह्यलिमाचनं
 नैलं १७॥ पाठं च माचनं १८॥ स्वामिनी च पात्राणि विधिवत्पूजयेत्तथा ॥ ततश्च किं समस्तं
 पात्रं दत्तं यथा विधि ॥ तत्रैव पात्रसाधनं प्रतिष्ठाप्य गुह्यं यत् १९॥ निवेद्य गुह्यं पात्रं वा मना रुच्य
 निवेद्य गुह्यं स्थापयेत्तुल्यं तदुक्तं स्वयं दुवा ॥ सत्वा गुह्यं समस्तं साधु ॥ किं ॥ अथ न तश्च २०॥ अथ पा
 ३२

पाठं ३२ ॥ ३२ ॥ ३२ ॥
 पाठं सुयं पीत्वा वीरासि पुरुष तर्पयेत् ७॥ पुद्गलं दीपमाला च कूलदीपाद्युदयं च ॥ दत्तं मूलं नृप
 तर्पयेत् सहस्रं वा तदुक्तं ८॥ तदुक्तं वा तदुक्तं वा पि यथा ९॥ अथ समस्तं तत्पञ्च १०॥ कर्कशं
 सह निवेद्य च १॥ विन्दुं ह्यलिमाचनं कवी १२॥ श्रीपात्रं विन्दुमर्पयेत् १३॥ वा ह्यलिमाचनं ततश्च कृत्वा
 पुनश्च महिषी कालिको १४॥ सा त्रय्या न क विल्लादिनी तवाद्यादि न तर्पयेत् १५॥ पतने च मने ह्यलिमाचनं
 माहि रुद्रा नृपति १६॥ यत् १७॥ ह्यलिमाचनं यागिनी सुसंवल्ये विचक्रि १८॥ गावयित्वा
 महाकाली विचक्रि सहस्रं कलि १९॥ विभिना वलिमाचनं दत्तं पूज्या अलि त्रयं २०॥ श्रीपात्रं
 च सुयं पीत्वा २१॥ अथिकं यत् समस्तं च २२॥ वक्तुं दत्तं नृपति च तर्पयेत्तथा २३॥ पवित्रान्
 समस्तं मूलं मत्री समस्तं तश्च २४॥ हृदया मुक्तं मल्लं गुह्यं काली समस्तं २५॥ अथिकं यत्

विहाडं विहनेनैयथ सर्वं ॥ अथमाद्यातकी संध्यासूयाध्यविधि विहसः ॥ मयत्रैवयथमकि
 जफा पसुयवर्धव ॥ पूषां जलि समर्थाथ पुनः पूषां विधायव ॥ पंचापचामसां गेलपर्वोक्त
 विधिनाथवा यहा समष्टि मंत्रं लपुजां कुर्यादतन्नि ॥ समष्टिर्विष्टिपुता र्णां गुह्यकाली प्रसी
 दति ॥ दशकालानुसारं लपुजां कुर्यात्समाधये ॥ अहं काल दोर्वर्त्यं वालवृद्धा दुर्वै नपि सम
 द्दीपुतां या काली पडनीया सुभक्तिर्गै ॥ समष्टि पूजयेत्तथा कालिसू प्रसीदति ॥ अथमाद्यतनी
 संध्या कृत्वा साधकसकल मष्ट्या यत्रां स नू सर्वैर्यसक विंशति संख्यायां ॥ पश्चिमो हि मुखो वीनं ॥
 समष्टि यवर्धव ॥ दीपमासां विना नाद्युमहायुषे स्वपिगे ॥ गवावीनामहा काली पूजयेद्वा
 गमै विष्टि ॥ विष्टि संको समष्टि र्णां पूजां कृत्वा विधातवि ॥ गलागं वट्ट कानाच कुमावी लवि ॥
 प२

धर्मे ॥ विष्टि पूजां कृत्वा सल सिद्धि मरिपिना ॥ वठकीं पंचवर्धय नववर्धये गलागं वीना ॥ क
 मावी मष्टवर्धना सल कृत्वा जनादिति ॥ गलागं वट्टको दीध्यं कृत्वा गवृहा वयं ॥ पंचा
 पचानसां गेल समष्टि मन्त्रनाथ ॥ पूषां जलिवर्धये कृत्वा पंचपलवसत्तु ॥ कुमावी नव
 र्णां व्यायु न्यथा मकि र्णपेत्तन ॥ गता विसर्ज्यं कुंजी गवी नै ॥ मरुसग कि केश ॥ अथाह
 नात्रिकी संध्या कृत्वा पसुयवर्धव ॥ वीनद्वयं लके संध्या नै ॥ मरुसाधकः ॥ गलागं मरु
 मसानां कृत्वा न्यनी कालि काय ॥ कृत्वा गलागं वट्टको का के गधनि मचये ॥ वाल
 वट्टये वपुगे विष्टि र्णां वृत्तना रुसे ॥ यागिनी र्णां वट्टको पवि वारं गली मरु ॥ स्वचये कवये
 यो के न कुमा साति र्णां कृत्वा नू लुकि मीयसा नै ॥ गुरुं नी गुह्य कालि का ॥ पुरयदक मागे
 लमहा वीना निरुपया ॥ श्रीगुरुं पनया रुक्ता ॥ तावयेद विनादिति ॥ गुरु मला कि या सवा

गुनमसादिसिद्धयः ॥ तेन न कृत्वा कृत्वा न स यत्कदाचन ॥ ५ ॥ केन केन मार्गन कृतं यत्किंचिदपि
 निकाः ॥ सर्वे कर्माणि मनुजैः सावधाना विधानविः ॥ वसिक मालिक कृत्वा निमिथं विग
 यतः ॥ ततः सुलक्षणं मकारः काकासा नृयो वनाः ॥ संहो पश्य पश्य रुक्म देवी सावा ह्वतः
 ॥ ॥ समष्टि यष्टि मा गेह किं वा पंचा पचा नतः ॥ गुह्य कार्त्तु गच्छा यत्तथा ॥ किं रुपे मने
 ॥ विसृष्ट देवता वीचः सु सुयो मरु पिवन्मधु ॥ उक्ता वीच गले सादृष्ट नृपा मरु निधे दये ॥
 ॥ ॥ धीया देवी मने व्यायुत दाका सी मने रुपे ॥ सेवी देवता का व मा म गेहो न न समन ॥ अह
 तत वना विष्ट निर्विक स म हा ॥ यः ॥ विन्द पाते निवान नृ राव यिवा मना मति ॥ किं सर्वे धन
 मे समाधिक ल सा मुक्तः ॥ अथ ध्याय म हा वीच म य काने व वा व हा ॥ या नि सि गि व म का स्य न

तदर्थं च २

हा यं रुद्र मिष्टि तः ॥ तेन न ततो म हा वीचो निर्विका या ग ग रु म ॥ वा विष्टा तपे य देवी मने मत्र
 ल साव क ॥ अष्टा रुद्रा नैवा पि रुद्र क ॥ तपे यिवा म हा का सी यन्तु वीच त्रिको लके ॥ पद्या
 जलै विष्टा या ध म ल मंत्रे ल साव क ॥ रुद्रि देवी सम द्वा स्य विनये रुय था म ॥ ॥ अथ वि
 यामिनी संध्याः कृत्वा पश्य य पर्वत ॥ पंचा पचा वसा गेह समष्टि मने ना निवा ॥ यष्टि मा
 गेह वा पूजा कृत्वा रुद्र मने नतः ॥ पूजा जलि त्रय कृत्वा तम स्य त्वा विम रुपे ॥ पातया दिष्ट म
 व्यास पंच त्रय पिय था क म ॥ पंचा ना गु व ना था ना ॥ के के गु न म र्व ये ॥ पंच सृ पित काल य गु
 ह्य का सी म म र्व ये ॥ अथ क ८ पंच काले य वाष्टि पूजा म हा म वे ॥ पूजा जलि त्रये ॥ पिस
 मष्टि मने ना पिच ॥ पात पूजि त पात्र रु सु र्वा या रुपे ये द्वि वा ॥ पंच काले य ८ र्वा

कर्म न कर्म न न ॥ प्रातः कथा वा कथ्यो ॥ प्रायश्चित्ता (धर्म) सा च न ॥ प्रातः संध्या मकरादु
मध्याह्ने समपत्ति ॥ आदी मध्याह्ने की कथा प्रातः संध्या मध्याह्न ॥ उपपत्ति ॥ दिय ४ काल
नका सीता सपा सपु ॥ अनिरु संध्या कथीत प्रायश्चित्ता कथ्य पूर्वक ॥ उत्त काली मपाधीना
दिवा वात्र मगं दिन ॥ वसने ल मदावी व २ संध्या सिद्धि धनो हव ॥ ते वधी र वा का वा नि
गुहान् गुरु कर्म ॥ लुका रु स ४ कालानुका मानु नृक काली पदं व ३ ॥ संध्या स नि न ह ग का
लिका निव पदने ॥ य कृता साधको मो ह ॥ य कालि १ संध्या र व ३ ॥ लुका क धंधा पिता च न
का संध्या वल पुरा ॥ तं व संध्या स दे व मि न क द ध ॥ सु न स म न ॥ आ निर्व कु च सि हा स्य प्र
न संध्या वि दे व न ॥ रु व व कु क पि न्द्रा स म द्या दे दे व न वि ३ ॥ रु लू क व द न ग क

सायं संध्या वि दे व न ॥ म क रा खौ स्य ग ता स्य व ॥ अर्ध नात्रा वि दे व न ॥ रु या स्य व न ना
स्य व ॥ पु न्य संध्या वि दे व न ॥ च नु ४ पंचा ग ति मि ते १ क र्त्त व ॥ आ नि गा स द न ॥ ॥ ध्या न
॥ द ह व कु म रा काली पी नो न्न न प या ध ना ॥ ध्या नि १ मि ह धि वा क पी लु रु च व ३ रु लू क
ना नो ने ना धा रं मा क व रु मि ता वि व द ना ॥ ना रं सू र्वा ना रु रं ॥ ध्व नं कृ सु सू ला दि ग च
धु म लं ॥ पि रं रु वि डा रु नि रु ॥ मि रं ध्या म न वि प रु नि द व नी व कालि काली रु रं ॥ चि
उ त्ते रु क पा स ख न व स ना ॥ किं च ख द्रा न के ॥ म उ चा क्म वी च ॥ धु रु क रं वी ही ली व क
का ली के ॥ पो ध ना क ल स प्य क द नि रू रं वी धा व नु रं धा ॥ रं ख पा व क पा व नु रं धा
व क सा धा व सि रं धा ॥ व सु मं ग न ठा म न व द व नी वा म रु रं धा ॥ वि द ना व ली क हि का व

मपि गधार्जुनं न्यत्र ध्यात्वा कुरुष्वः । दलं कुरुमथाग्निं हलं नृपदं स्रुचनं पस्ककं ॥ कर्नं नन्दनपा
विप्रोक्तं कुरुष्वः । यत्नं मनामनुमुक्तं ॥ श्रीमंतिष्ठिम् ॥ गुरुस्वस्तिकम् ॥ अर्चयेत् ॥ अगदुर्कं सु
कंदलुने पशुपतिं कुरुष्वः । अतश्चानुयत्नं कुरुष्वः ॥ कुरुष्वः श्रीमत्सर्वं हलं मपि नृपदं ॥
विप्रोक्तं स्रुचनं नन्दनपा ॥ देवीदिव्यां वनाद्यां कलिमलदलनीं ॥ गुरुस्वस्तिकं नमामि ॥ वासां ध्यात्वा
ध्यायेत् ॥ द्वितीयां समस्तकुरुष्वः ॥ नृपदं पूजां ॥ कुरुष्वः श्रीमत्सर्वं कुरुष्वः ॥ अविश्रुमादगां ननापु
नमपासनीया ॥ ॥ तीर्त्तनां नाडिशूतिं ॥ दिरुकां कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
काले पविचिनीया ॥ श्रीमत्सर्वं कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
हलं सर्वं कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥

ककालपुलगाप्रिस्निहा ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
पीतवर्कं नृपदीर्घं कुरुष्वः ॥ ॥ पनामनां नन्दनसाहित्यं कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
नासां ॥ निष्कल्याणं स्रुचिनीया ॥ दिनां कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
नाविधं चिन्तयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
नीमिवर्कं ध्यायेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
नन्दनाथं विचिनीया ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥

१ कलहालपुनर्वर्कं गुरुस्वस्तिकं मनामनुमुक्तं ॥ त्रिकोणं कुरुष्वः ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥
उत्तरेण पविचिनीया ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥ अर्चयेत् ॥

चक्रा लीपकच ॥ सकल मलमंत्रचक्रं शुद्धं विहा वयं ॥ सापिण्डकृतमाया निगुणवत्
यका मलं ॥ बहस्यं भावनं वक्तुं कलया गीतुं वदितुं न शक्तिं नृगतेनिकी लं तु विलिख्य तत्स्य
मूढया ॥ तत्राभां वृत्तिव्याप्यं प्रचयुक्तं वस्तु कं ॥ पंचपुतानसमस्य च नृपा नृनिधाय
के ॥ नमो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ यद्वै तिस्रं पञ्चराशनं ॥ वीरद्वये नमः पर्यहृदि मलं मनः सव्यं ॥ न
लिहानं पुदग्यं ध्यायं ॥ वक्तुं यत्नं नृप महामां स गन्मथ किंचिन्निद्रिय मलं नृप नृप कि
कृतं वृषे नृप पितृ गुरुं समनं ॥ शुद्धं विहा वयं द्विजानि द्विकायेन वत्सी ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥
रागं तु मनः संकल्पं न वदितुं ॥ शिवं किं मयि सर्वं ध्यायतां यागिनः सदा ॥ वसुधैव कुटुम्बकम्

[illegible]

यागिन्यावृद्धावृद्धे दके चके सां ग सा य धा स वा रु ना स पा वि वा वा ४ सर्वो पचा जे ४ क
 रिता सै दु पू व्या ऊ लि सम र्या ॥ न म डी पु द भे थ ॥ इ नि प्र थ मा व र ॥
 न न ४ बी ४ द ले ॥ ही का ल स मा रु न व का य न म डी सै पू क ॥ ग धु वा रु न मा रु
 हा मा मा ली म द वि रु मा ॥ म द ग ता ल वा दि न ४ पु च लु पा रु मा म द ॥ ड रु ना दि
 वा मा व र ॥ १ ग म न का ली ॥ २ रु का वि ली का ली ॥ ३ सि हि का का ली ॥ ४ व म डी
 नी का ली ॥ ५ क री कि ली का ली ॥ ६ हा वि ली का ली ॥ ७ सि ला व नी का ली ॥ ८ रु म नी का ली
 ॥ ९ रु वि का का ली ॥ १० रु का व का ली ॥ ११ ता र का ली ॥ १२ रु न का ली ॥ १३ ना दि नी का
 ली ॥ १४ मा यि नी का ली ॥ १५ सा मि नी का ली ॥ १६ हा सि का ली ॥ १७ री री र क वा लु च के थ

वी धी पा ॥ ०० नि च के थ वी म च ॥ १ ग ४ स म रु पु च लु या गि न्य ४ का ल स मा रु
 न व के सा म ०० या दि पू र्व व ॥ २ मि नि या नि म डी पु द भे थ ॥ इ नि द्वि ती या व र ॥
 ॥ न गो द्वा द ४ द ले का ल स मा रु न व का य न म ०० नि सै पू क ॥ का क वा रु
 न मा रु हा रु म डी क वा लु ॥ मा रु लु या गि नी सै या रु मा म र्ग म रु यः ॥ क
 वा दि वा मा व र ॥ ३ ही रु स रु हि का ली ॥ ३ सि नि का ली ॥ ३ सै हा व का ली ॥ ३
 रु म का ली ॥ ३ य म का ली ॥ ३ का ल ग स न का ली ॥ ३ का ल वा ली का ॥ ३ व लु व लु थ
 नी का ली ॥ ३ वी व वी व रु नी का ली ॥ ३ म हा रु ना के का ली ॥ ३ व के थ वी का ली ॥ ३
 का ला मि का ली ॥ ३ रु च लु री च के थ वी धी पा ॥ इ नि च के थ वी सै पू क ॥ ३ ग

समस्त मातृशुभागिनी कालसंकर्षणचक्रमागं ह्यदि पूर्ववत् ॥ लिङ्गमूर्धं
पुदगं यत् ॥ इति गीतायां वचनम् ॥ ॥ गंगाद्वयं ॥ १ कालविदावलचक्राय
नमः ॥ तिस्रं पञ्च ॥ सिंहवाहनमावृता मां सन्निपात्य यः महालिखलुया
गिन्यः पातु मां कवासमा ॥ १ उरुवादिवासावर्णेन ॥ ॐ ॐ ॐ वदन्ति कालिकां
वीणा ॥ २ रुद्रवर्णि ॥ २ कोमावी काली ॥ २ वैष्णवी काली ॥ २ वाहिनी काली ॥ २ शक्र
वर्णि काली ॥ २ चामुण्डा काली ॥ २ चण्डिका काली ॥ चण्डिका चक्रं
वीणा ॥ १ गङ्गासुखलुयागिनी कालविदावलचक्रमागं ह्यदि पूर्ववत्
॥ ॥ तमस्तुमा पुदगं यत् ॥ ॐ निचतुर्थवचनम् ॥ गंगा नवको ॥ १ ॥ १ ॥

कालमूर्धं रुद्रचक्राय नमः ॥ ॐ तिस्रं पञ्च ॥ महिषासनावृता दण्डपास
कनीयगा यो वा त्रयलुयागिनी पातु मां कालकीर्तनाः ॥ पश्चिमादिव
मावर्णेन ॥ १ चक्रकालिकाया ॥ १ महासु कालिकाया ॥ १ महायमका
ली ॥ १ महामूर्ध काली ॥ १ महारुद्रकाली ॥ १ यममां काली ॥ १ म
हामातृ काली ॥ १ कालाग्नि काली ॥ मूल ॥ १ गुह्य काली ॥ १ ॐ ॐ ॐ
गुह्यं चक्रं विष्णो ॥ १ गङ्गासुखलुयागिनी कालमूर्धं रुद्रचक्रमागं ह्यदि पूर्ववत्
॥ ॥ ॐ ॐ ॐ तिस्रं पञ्च ॥ ॐ निचतुर्थवचनम् ॥ गंगा नवको ॥ १ ॥ १ ॥
गंगा नवको ॥ १ ॥ १ ॥ कालसंहारचक्राय नमः ॥ तिस्रं पञ्च ॥ १ ॥ १ ॥

॥ सा सा काली ॥ कौंथ अनाखा ॥ हृदि सहाय ॥ वाम कर्णने स्त्रिति ॥ दक्ष कर्णने सहिका ली ॥ तदुक्तिका ली ॥ नमः
 सिद्धता गदा रूपा ॥ ललाट त्रिकोणा नमः ॥ गो वेद स व्याख्ये स्व स मने ली ॥ आवा रुना विद्रुम
 दि मुद्रा नै विष्णु य ॥ तस्यां सर्वो ज्ञः पूजा नै विष्णु य ॥ गद्य धा यो ॥ महा मने कालिका धी वा य ॥
 इ का पूजा मित्र यय मित्र मठा ॥ दक्षिण क ॥ १ ॥ श्री यल काली ॥ वाम क ॥ १ ॥ क म
 काली दक्ष ने ॥ १ ॥ काल कालि ॥ वाम ने ॥ १ ॥ ग ग ग काली ॥ दक्ष ग ॥ १ ॥ सा सा क
 ली ॥ वाम ग ॥ १ ॥ वी र्य काली ॥ ड ड ड ॥ १ ॥ वर्ष कृष्ण वी काली ॥ ड ड ड दक्ष प की ॥
 १ ॥ गाम व काली ॥ श्रु ॥ दक्ष प की ॥ १ ॥ रू का विली काली ॥ श्रु ॥ १ ॥ सैव विनी काली ॥ वि
 व के ॥ १ ॥ वमो ध्वनी काली ॥ दक्ष व दक्ष म ॥ १ ॥ न किनी काली ॥ दक्ष कृष्ण ॥ १ ॥ ज विनी काली ॥ दक्ष म वि
 व ॥ १ ॥ लीला वनी काली ॥ दक्ष के यो ॥ १ ॥ ड न काली वाम बाह ॥ १ ॥ कृ लिका ली ॥ वाम क
 म ल

यो ॥ १ ॥ कृ का व काली ॥ मलि व ॥ १ ॥ गार्त काली ॥ वाम क ना ॥ १ ॥ रू व काली ॥ ना
 ली ॥ १ ॥ ना दिनी काली ॥ पृष्ठ रा ग ॥ १ ॥ मा पि नी काली ॥ क द्यी ॥ १ ॥ स्वा मिनी काली ॥ १ ॥ द
 का व ॥ १ ॥ ग मिनी काली ॥ दक्ष ज न नि ॥ १ ॥ य म काली दक्ष ज द्या या ॥ १ ॥ रु म काली ॥ द
 क्ष पा न ले ॥ १ ॥ काल ग स न काली ॥ वाम ड व ॥ १ ॥ काल वी र्णिका ली ॥ वाम ज न नि
 ॥ १ ॥ च लु यो ग ध्वनी काली ॥ वाम रू द्या या ॥ १ ॥ वा रू द स काली ॥ वाम पा द ग ले ॥ १ ॥
 उ व सै पृ थ ॥ पू न म ले न य थ ॥ कि धि सि य थ ॥ कि स न य ॥ पू न ॥ प द्री प न
 वें द्या दि के ॥ न म स्तु त ॥ य थ ॥ कि द क्षि त्त व सु र व ल ॥ दि के रु ल प का न्ना दि के
 द क्षा स न्ना ॥ ॥ ॥ ग कि वि रू र न न द लो ॥ ग मि रू दे व ग र प ल ॥ स म रू द्या य म न

यावदाद्रुमा रंजिता ॥ तद्वर्णा दधि मधु दधनी वदवा दिलि दुवा नमस्कृत्य ॥
 कुमानि वि सक्त ॥ तयो लमा र्जु नानि वि धाय ॥ द्वादश मिथु नरा नन का वयित्वा सय
 वरु क्ता यथा सुख विदने दिनि कुमा री या ग ॥ ७ ॥ काली क म धुरी ॥ १ ॥ द्वा द्वे म द्दु र्दु ल्क
 य प्र द्वा म न क्ता प्रा ण या म र्क त्वा गु नू प र्ता क्ता ॥ तथ यथा ॥ अस्म गु नू म न र्म य प
 नम मि व स मि नू र्दु र्दु ल्क म ह का ली का म क ल वि द्या प द म क प व म गु नू दे व ना
 ॥ श्री वी र्ज गु १ ॥ कि स्वा हा की ल क स म स क ल क क म र्क ल प्रा फे य वि नि या ग
 ॥ ४ ॥ इति व द्वा ज लि पा ठि त्वा धाय ॥ स ह सा य गु नू धा य स ह स रु टि क म नि र्ता व वा रु य
 क न ॥ न ह्यु काली काल रु वि ग ॥ व क्ता कि समा लि ग को मा न द न मा र्क वी पु स

नू व द न ॥ गु १ ॥ स र्व क म र्क ल प द ॥ ४ ॥ नि ध्या त्वा मा न ॥ ४ ॥ प वा य १ ॥ स पृ क ॥ म ल द म
 धा ज स्वा व धा ज लि पु ल म ॥ य स धी पा द न र्जु मा न कि न म स क मि व न म न म
 रु पा र्क त्वा त स धी पा द का म ति ॥ यो मा रु त म सा कान् म र्क न र्थ ध कृ प न ॥
 के व ल क प या ना थ त म र्क न र्थ ध कृ प न ॥ स मा न त म सा ध स न न र्जु न र्जु ना
 क या ॥ न र्म म धा नि र्थ न र्म म र्क धी गु नू व न म ॥ इति गु नू प र्ता ॥ अथ गु नू धा कि प
 ॥ तथ यथा ॥ अस्म गु नू धा कि वि द्या या प व म गु नू प र्ता वि रु द्ध रु द्ध गु नू धा कि दे व ना
 श्री वी र्ज गु १ ॥ कि स्वा हा की ल क स म स क ल क क म र्क ल प्रा फे य वि नि या ग ॥ इति व द्वा
 ज लि पा ठि त्वा प र्क व ॥ धा त्वा मा न मा प वा य १ ॥ स पृ क ॥ म ल द म धा ज स्वा स म य

वध्वंशलिपुत्रमं०॥ गुरुभक्तमहामाये सर्वभक्तिसुखरूपिणि॥ सर्वकर्मफलदा
दिगुरुभक्तिसुखरूपिणि॥ अथ पादकाव्याया प्रकटरेचवा प्र
विदीपादकाव्याया महामाये पादकाव्याया सर्वविधाभक्तिसुखरूपिणि॥ सर्व
कर्मफलदा गुरुभक्तिसुखरूपिणि॥ इति वध्वंशलिपिः पादकाव्याया मं० ॥
सिद्धिं वासुपायं च पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया
दुःकायं नमः स्वाहा॥ दुःकायं नमः स्वाहा॥ वासुपायं च पादकाव्याया महामाये
पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया
महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया महामाये पादकाव्याया

[illegible]

वाहचतुर्भुजः॥ अष्टपादा कना लासा जलमद्यपुता छियः॥ न कश्चि नय नां कू ला
 दंष्ट्रा ध्या नरयंकनीः॥ द वगा दधती हसं सर्वकामरु सपदाः॥ इति ध्या त्वा मा
 नसा पचाये स्य पूजक॥ मूलदश अङ्गुष्ठा वध्वं अलिपुलभं॥ त्वं वद्वच चरत्सिद्धि
 वि सर्वसिद्धि पुदायिनी। पुसी दव नदं द वि सर्वसिद्धि १ पुच दू म॥ ७॥ अथ सु
 लदे वगा जग्यादि न्या सः॥ अथ यत्तु न्या स॥ इं थं थं थं थं पुकठ का लिका ये
 श्री गुहा न्या नमः॥ ३ थं विकठ का लिका ये त र्जनी थां २॥ ३ थं ईद्वि नि का लिका
 ये मध्या मा थां २॥ ३ थं द्या व का लिका ये अनामिका थां २॥ ३ थं अदना सकालिका

ये कनिष्ठा थां २॥ ३ थं ४ मित्रा मालिनी काली काये क वग न पृ थ्वा थां २॥ यत्तु न्या न
 मः सा हा वयद दं दू द॥ इति ध्या न॥ मूल अ प न॥ सा व॥ त्वं वद्वच यादि॥ नमस्कृ त्वा
 पार्थये०॥ ॥ अथ निर्वो ल॥ अथ निर्वो ल वद्वच मंत्र सा पर्व वद्वच व व य वि उ ग नी
 कृ द २ प र्व वद्वच दे व गा हवी र्जं स ४४ कि ४४ धा र्ज की लकी म म व द्वा न त्व पा फ ये वि नि
 थो ग ४॥ इति व द्वा अ लि॥ ध्या नं॥ निवा लं व निवा कारं निर्वि क ल्या नि व ड नं॥ अा नि मय
 प र्व वद्वच मय नु हा णि सा ध कः॥ इति मूल अ प द ४॥ व द्वा अ लि पु ल भं॥ अथ नमः
 नदि नं॥ अा नि मय मना कू लं॥ सर्व धा पि निवा कारं॥ प र्व वद्वच न मा मुने॥ अथ निर्वो
 ल वा क्यः॥ अ न्क अा नि नदि अा नि॥ ध्या प क अा नि व व च॥ अि न त्व नदि नं॥ अा नि सर्व अा नि

नमो सदा ॥ वसुधा कृता ॥ परं वसुधा कृता ॥ सर्वं वसुधा कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं
 ॥ अस्य दत्तं वा वनमंत्रं सप्तमं नमो ॥ नमो पञ्चमं दृष्टी महावसुधे ॥ वसुधा कृता ॥
 कृती कृती कृती ॥ (मन्त्रं कीलकं मम वा वसुधा कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं ॥
 नापद्यते ॥ पद्यं वसुधा कृता ॥ नमो पञ्चमं दृष्टी महावसुधे ॥ वसुधा कृता ॥
 वसुधे कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं ॥ वसुधा कृता ॥ सर्वं
 दत्तं सप्तमं दृष्टी कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं ॥ वसुधा कृता ॥ सर्वं
 दत्तं सप्तमं दृष्टी कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं ॥ वसुधा कृता ॥ सर्वं
 दत्तं सप्तमं दृष्टी कृता ॥ इति पठितुं ॥ इति प्राग्वह्यं ॥ वसुधा कृता ॥ सर्वं

[illegible]

ॐ ह्रीं कुरु २३ रुद्र स्त्राहा ॥ इत्यस्मिन्त्रयः ॥ किंचित्कलमादाय ॐ यं स्त्राहा ॥ वासनास
याहदिनीत्वा ॥ ॐ स्रं स्त्राहा ॥ इति सर्वपापदम्बा ॐ खं स्त्राहा ॥ इति कननाभया ॐ खं स्त्रा
हा ॥ इति त्रिभोनिद्रिया ॥ ॐ (खं खं खं स्त्राहा) कायवन्दमर्चनिवन्दयामि पुनीच्छ्र
हा ॥ ॐ तिस्र्योर्व ॥ मलद्वताग्न्यादिषु ॐ सूर्यमनुसंधानं ॥ ॐ यं खं उग्र
दादित्यमनुसन्तर्हिन्नीवचेतन्याये ॥ धीमहा कामकला कालिकाये निवन्दयामि
पुनश्च स्त्राहा ॥ ॐ त्रिभुवनदान ॥ यथा ॥ मलद्वय ॥ अथ गायत्री ॥ त्रिसा कामकला
कालिका गायत्री विद्यावृद्धये नमः ॥ धीमहा कामकला कालिका देवता ॐ
वीजं स ४४ किं (गं वं कं लं कं मं वं लं वं पां फे यं विनि या ग ४॥ इति ॥ ध्यानं ॥ वहुर्गं

ऊवाहित्वत्तवकुं त्रिसा चना ॥ मूठ खद्वा ॥ पात्रालि माला कलिके सुदिका ॥ दधनीं मु
उमाला ॥ ॐ नवनवना सवारी ॥ दंष्ट्रा धावसूखी ॥ ध्यामी नागालं कालं त्रिविगां ॥ मानसं द
य ॥ ॐ कामकला ॥ कालिकाये विद्महे ॥ ध्रुवं ह्यकालिकाये धीमहि ॥ स्वर्गं नन्न ४४ कि
४५ च दया ॥ इति मलयथा ॥ किं जपित्वा ॐ पञ्च यवद्वा ॐ सिपल मं ॥ ॐ गायत्री वृद्ध
विद्यासि सर्वसिद्धिपदायिनी ॥ कामकलामनु सिद्धिं देहि देहि नमोस्तुते ॥ ॥ अथ
नृप्यहा विधिः ॥ ग्रीं पञ्चमगुनं नृप्यया मिनेम ४४ स्त्राहा ॥ ग्रीं पञ्चम ॥ गृ ४ पञ्चम ॥ ग्रीं
ग्रीं गृ ४ सर्वगुनं ॥ ग्रीं ग्रीं गृ ४ स्त्राहा ॥ ॐ ग्रीं ग्रीं गृ ४ स ४ स्त्राहा ॥ ॐ धीम
वृद्धगुनं स्त्राहा ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

हा॥ हृदि॥ ॐ पंचलु॥ शिवसि॥ ॐ जाकिनी॥ धनत्रय॥ ॐ रुद्रकालिकाये नमः स्वाहा॥
 जलत्रय॥ ॐ संखं गायत्री कूं रुद्र स्वाहा॥ पूजा वस्तु या क्रिया॥ ॐ संखं (ग्रीं) सः स्वाहा॥ पूजा साध
 नं॥ ॐ संखं (ग्रीं) सः स्वाहा॥ गन्धादि (ग्रीं) धनं॥ ॐ संखं (ग्रीं) सः स्वाहा॥ नैवद्या (ग्रीं) धनं॥ ॐ सं
 खं श्रीं सः स्वाहा॥ रुद्र नमः स्वाहा॥ यत्कुनि मन्त्रः॥ ॐ संखं श्रीं सः स्वाहा॥ रुद्र नमः स्वाहा॥ ॐ संखं
 श्रीं सः स्वाहा॥ रुद्र नमः स्वाहा॥ ॐ संखं सद्यै कूं रुद्र नमः स्वाहा॥ इति विद्या कलि॥ ॐ (ग्रीं) पुनः
 गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) गुनं कथं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं)
 पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥
 ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥
 ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥ ॐ (ग्रीं) पुनः पुनः गुनं नमः स्वाहा॥

सिद्धये विनियोगः ॥ बद्धीर्घराज्ञावीरकनाङ्गन्यासः ॥ सर्वभक्तिप्रदीप्यायै कालिका न्यासः ॥
 हृदा । दद्याद्यो नमस्वीभ्यामी मूढमाला विरुषितादिगन्धर्वकनायासायै नटैकधनो
 धिवा ॥ शिवभक्तिधर्मान्ना कूलध्यानुपवा ॥ मानससंयुक्तं मूलं समयेन वसपादे ॥
 रुंभुंखुं पुकठकालिकाभक्ति कालिकये नमः स्वाहा ॥ दक्रपाद ॥ रुंभुंखुं सुं विं कठकालिका
 ॥ ॥ वामकठ ॥ रुंभुंखुं दं दृष्टी कालि ॥ दक्रकठ ॥ रुंभुंखुं सुं द्या नमस्वी कालि ॥ नारी
 ॥ रुंभुंखुं सुं त्रुहा दृष्टा मिनी कालि ॥ वामास ॥ रुंभुंखुं सुं नयामालिनी कालि ॥ दक्र
 म ॥ रुंभुंखुं सुं मय प्रसा कालि ॥ क ॥ रुंभुंखुं सुं खर्विनी कालि ॥ शिवसि ॥ रुंभुं
 खुं सुं जयपदा कालि ॥ रुंभुंखुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सर्वभक्तिप्रदीप्यायै कालि

कामकलाभक्ति कालीका कला नमस्वी पुकठदिशे नवप्रमादिनी रुयपदा कालिकार्थे न
 वहाके वापकानमः स्वाहा ॥ श्रीमस्तकपादार्क ॥ सर्वभक्तिप्रदादवि सर्वभक्तिस्वरूपि
 ली ॥ भक्तिन्यासहस्तदिशे सर्वभक्तिप्रयच्छमे ॥ ॥ मधवीरुन्यासः ॥ अस्य वीरुन्यासस्य
 विकठरुं नवप्रविदिपाके दृष्टी महाकामकेलादेहिनी वीरुपदावीराधनी देवता खुं वी
 ऊं स्वाहा भक्ति ॥ भर्षकीलकं मम सर्ववीराधनं विनियोगः ॥ बद्धीर्घवीरुन्यासो मूढवीरा
 न ॥ मल्लुककुचिह्नं हस्तं शिवभक्तिधर्मान्ना ॥ पर्ववत्सस्य नंदे वीवीराधनी कालि
 का ॥ मानसंयुक्तं ॥ खुं खुं ॥ स्वाहा ॥ दम ॥ अज्ञानासंयुक्तं ॥ रुंभुंखुं खुं खुं ॥ स्वाहा
 रुंभुंखुं स्वाहा ॥ मलाध ॥ न ॥ रुंभुंखुं स्वाहा ॥ स्वाधिज्ञानं ॥ न ॥ रुंभुंखुं स्वाहा ॥ नारी ॥ न ॥ रुंभुं

[illegible]

वदन्त्यपु फथ विनियोगः ॥ नमः स्वाहा ॥ व्यापकन्यासः ॥ कन्या न्यासः ॥ ॐ मुं खूं लूं पकठ
कालिकायै श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ लूं दिकठ कालिकायै तर्जनी ॥ ३ लूं दंष्ट्रिणी कालिकायै
संध्यामा ॥ ३ सुषोभ कालिकायै अनामिका ॥ ३ लूं श्रुद्धाहसि कालिकायै कनिष्ठा ॥ ३ सु ४
शिखामालिनी कालिकायै कनकस ॥ ३ लूं नवडा निडा ॥ युकुलस्य सेंद (ग) ॥ अथ व्यापकन्या
सः ॥ अस्यावीरुद्या न्यासस्य कालाग्निः पूज्यः सदा शिवपुत्रकठानन्दः सर्वविधिना हृच्छन्दः ॥ म
हाकाली कामकलादग्निनी सर्ववीरुपदामूलसुप्रकृतिदेवता खोवीरुख ४ भाकि ४ (ग) व्यकील
कममभावीजापाने सर्ववीरु एते विनियोगः ॥ खूं खूं खूं खूं खूं खूं ॥ इति कन्या न्यासो
॥ सर्ववीरुपदा व्याथल्लपुत्रकालिकायै कनकस वदना ॥ ममक के ॥ शिव ४ मुद्राः
महाभयं कुरु गायानां गोसकालरुधिर्गोसकलं भयं धर्मायै शिवभाकिं धर्मायै ॥

कल ध्यान समा सीना गरुह सा कम उया नव चर्म पनी धानी दधुया वसूची सु भ
 ॥ चर्व ध्यावा मान सैय क ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा ॥ नर्न दधुया ससय प ॥ ॐ स्वां स्वं
 पनर्म सा को सत प्रकृति रूपिणी ॥ वीरु धा रा कवि व्यामि क द द ह क न द्य मे ॥ ॐ स्वां स्वं
 ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा जा सां धी ॥ ॐ जय ल श्री प्रदा कालि येन म ४ सा हा ॥ वा म पा द ॥ ॐ स्वां स्वं
 सिद्धि कालिका येन म ४ सा हा ॥ द क पा द ॥ ॐ स्वां स्वं वीरु प्रदा कालिका येन म ४ सा हा वा म क
 नि ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा कि प्रदा का ॥ द क पा द ॥ ॐ स्वां स्वं ल ल ल ल क ॥ वा म क ॥ ॐ स्वां स्वं
 ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा द क क ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा म स प्र कृति का ॥ म स पा द ॥ ॐ स्वां स्वं
 का ॥ नारी ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा म ४ जी व का ॥ ह दि ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा विक्रम रूखी का ॥ वा म द रु ॥
 ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा प क ४ म रूखी का ॥ द क रु स ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा विशुद्धि का ॥ वा म क ॥

ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व कनी का ॥ द क कृ प ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व सभा दनी का
 ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व विदा विनी का ॥ द क स ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व ज्ञान मची का ॥ की ॥
 ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व गुणि ॥ म रूखी का ॥ ग म ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व संधि धिनी मरुवी
 का ॥ वि व क ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व गुणि ॥ म रूखी ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व मधु वदा का ॥ वा म
 ना सि ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व सौ गंधिनी का ॥ द क ना सि ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व वक्रुणी का ॥
 वा म ग ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व सौ गंधिनी का ॥ द क ग ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व पुका विनी का ॥
 वा म न ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व विद्या विनी का ॥ द क न ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व संधि धिनी का
 वा म क ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व संधि धिनी का ॥ द क क ॥ ॐ स्वां स्वं ४ ख सा हा सर्व संधि धिनी का
 सर्व वक्रुणी का ॥

४ ख ४ श्रीमत्त हा काली काम कला पी ० ॥ किं व नाथे काली काम कला ये ॥ वि का ला ॥
 रुं सु रि ठा कि कालिका ये ॥ पुं ति नि ण कि कालि कान ये ॥ खें स हा न ण कि कालि
 का ये ॥ पंच को ल मू ग दि वा मा व र्हे न ॥ रुं मुं खुं ह्यां पु च लु का ॥ ३ खुं च लु
 का ॥ ३ खूं च लु का ॥ ३ कुं त्रि च लु का ॥ ३ युं च लु का ॥ न व को ल ॥
 रुं मुं खुं सो स ८ का ॥ ३ रुं स ८ वि क ट का ॥ ३ जो स ८ दृ हि नी का ॥ ३ खा स ८ धो न का ॥
 ॥ ३ रुं स ८ अ दा दृ हा स का ॥ ३ ख. सा स ८ लि वा मा लि का ना का ॥ ३ खुं स ८ मे य प्र
 ता का ॥ ३ खुं स ८ ख र्व का ॥ ३ सुं स ८ दय प्र दा का ॥ रुं मुं खुं रुं के नी ली का ॥
 ३ ॥ रुं ४ वि क ना लि का ॥ ३ जी सि दि क ना लि नी का ॥ ३ सी त्रि क ना ली का ॥
 ख रुं सो ड १

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

त्वमूडयातव्यं ॥ अथ शक्ति त्वय्यं ॥ वाम महा गम किं मानी यजिजुसि रुसं दत्वा
 हिमं त्रये ॥ १ स १ स १ स १ सर्व त्वं प्रया विनो कृता मरुत त्वा का तिका येन स १ स
 हो ॥ ३ ॥ स १ स १ स १ का सी का म क ला शक्तिं त्वय्या मि नम १ स्वा हा ॥ तिथा ३ ॥ अथ श्री
 भगवत्पत्नी ॥ ३ रु स १ सा रुं स्वा हा ॥ गौड दाल ति स्वा हा ॥ स सा डं द स ति ल स्वा हा ॥ वृमि
 स्वा हा ॥ अ हं व ह स्वा हा ॥ उं भं खं हं स १ सा रुं सर्व त्वं मरुत मय मा त्मानं त्वय्या मि न
 स १ स्वा हा ॥ त्वमूडया तिथा ३ ॥ ततो महा वाक् स्मरं ॥ उं भं खं अ न्त र्ना ति व दि शं ति
 ॥ ध्या पिक र्ना ति ये व च ॥ ति त्वं वा हे नं र्ना ति १ सर्व र्ना ति रु दं स दा ॥ सा रुं त्वा हा अ हं स १ स्वा हा
 ॥ व ह स्वा हा ॥ शक्ति मया रुं स्वा हा ॥ सर्व मा या रुं स्वा हा ॥ वृमि वा रुं स्वा हा स १ स्वा हा ॥ व १ स्वा हा रुं

४ स्वाहा स्वाहा ॥ ॥ अथ नक्त्योगः ॥ मूलाध्वजकृत्युतिनीध्यानः ॥ सूर्यकोटिपुगीकां
चन्द्रकोटिसूणीगलां ॥ मूलादिवह्नवंध्वान् व्यापिनीवह्निरूपिनीः ॥ नीवान्नीलुकवर्ण
त्वीः स्वस्वरूपा विचित्रयः ॥ चर्वध्यात्वा ॥ ऊं पुंखे दुंयं दुं परमशिवमानीय रसूंसे
४ स्वाहा ॥ पयोमृगमूलाद्युक्तमृग्याविनसर्वाद्देवद्वयमयोरुत्थायथागकिमूलरूपं
समर्पय ॥ पुनर्मूलं स्पर्शयेत् ॥ मंत्रायथा ॥ श्रीं सा धुक्कमयस्वाहा ॥ इत्यनक्त्योगविधिः
॥ श्रीवाराहनादि ॥ पूर्व्यां नक्त्युक्तिं कृत्वा मूलादिवह्नवंध्वान् व्यापिनीवह्निरूपिनीः
वर्णध्यात्वा वरुणासापठेत् ॥ ऊं दुं दुं यं दुं दुं इति कवचं कृत्वा समं सानीय ॥ ४ स्वाहा
४ स ४ स्वाहा ॥ इति युक्तसमानयः ॥ वक्ष्यंति ॥ ॥ देवगिरिकिसूलरूपविवानसमं चितं

५ यावत्प्राप्य विद्यामि तावत्सूक्तिं वाचयेत् ॥ १ ॥ अस्मीं सत्सु सदा ॥ किति मत्सु पया क
 न ॥ मया कलितं पाद्यादि गृह्यते वन्द्यं वा ॥ २ ॥ ॐ संखं श्रीं जीं को यं न संवं मं वं संहं स
 ३ ॥ ॐ स ४ श्रीं मत्सु काली काम कला गी कि ४ पा ॥ ॐ ह ५ पा ॥ २ ॥ ॐ संखं श्रीं जीं को यं न संवं मं वं संहं स
 व स हं स हं स ४ जी व ० ॥ ह ६ कि ४ ॥ ॐ संखं श्रीं जीं को यं न संवं मं वं संहं स हं स ४ स वं
 द्रिया लितं वाचनं ४ ॥ १ ॥ ग ७ पा ॥ ॐ हा ग ल स र्व वि न ति कृ नु सा हा ॥ अथ वाहन
 ॥ ॐ संखं ॐ सं ॐ श्रीं मत्सु काली काम कला गी के सर्वं ग ल पु धा वि नि श्च न ग के
 ० ॥ ॐ ग के किय ग के साम न स पु धा वि नि म हा का ल व क था नि नि व क हा ला
 मा ला के ना स पु क ट द ६ सि द्वि वा सि ० ॥ हा ग ० २ ॐ स ४ ० ॥ ह ति ४ २ ॐ स ४ स नि दि

ना र व र २ वीं स ४ अ ग वि द्या न क न २ ॐ संखं श्रीं स ४ ला हा म म द र्जा ग हा ० ॐ ह ० न
 म ४ ला हा ॥ म ७ द ध नि ॥ ॐ सं ४ ला हा ॥ या नि ॥ ॐ सं ४ ला हा ॥ ॥ ॥ ॐ सं ४ ला
 हा ॥ खं च ॥ ॐ सं ४ ला हा ॥ स लि हा ना ॥ ॐ सं ४ ला हा ॥ म हा स लि हा ना ॥ ॥ ॥ ॐ सं ४ ला
 ॥ म स ४ म हा को ली काम कला गी कि कालि य इ द मा स पु ग ला य स म य या मि व नी कृ द र
 ० न म ४ ला हा ॥ ॐ व ॥ अ व म नी य ॥ ॐ म ग र्थ ॥ ॐ द प र्थ ॥ ॐ म व र्थ ॥ ॐ म दी र्थ ॥ ॐ द मा र्थ
 ॥ ॐ द व र्थ ॥ ॐ म म र्थ का र्थ ॥ ॐ द न व र्थ ॥ ॐ द न व र्थ ॥ ॐ द न व र्थ ॥ ॐ द न व र्थ ॥ ॐ द न व र्थ ॥
 ४ श्रीं मत्सु काली काम कला गी के सर्वं ग कि कालि क ग व प वि वा रा व न मा म न र्जा ना दि
 सा हा ॥ म ल न वि स र्थ ॥ अथ र व व र्जा ॥ ॐ सं ४ सं ४ सं ४ सं ४ सं ४ ला हा म हा का ल का

॥ ॥ अथ नवकोला ॥ ॐ कं कासी काम कलाग कि प्र कठ ग कि का सि का री पी पा द का दू ग
या सि दू र द न म ४ सा हा ॥ ॐ कं उ गं ग र्य या मि दू र द न म ४ सा हा ॥ च व ॥ ॐ कं उं उं ४ का सी
का म ४ वि क ठ ग कि का सी का ही पा ० ॥ ॐ कं उं उं ४ उ गं ग र्य ४ ॥ ॐ वे वं ४ स ४ का सी काम
४ दं हि पी ग कि का सि का ही पा ० ॥ ॐ वे वं ४ स ४ उ गं ग र्य ४ ॥ ॐ कं सु ४ स ४ ख ४ का सी
का म ४ पा ० ॥ ॐ कं सु ४ स ४ ख ४ उ गं ग र्य ४ ॥ ३ कं सु ४ स ४ ख ४ का सी काम ४ अ द्वा द
हा स ग कि का उं उं सि का ही पा ० ॥ ३ कं सु ४ स ४ ख ४ उ गं ग र्य ४ ॥ ॐ सुं स ४ का सी
का म ४ गि रा मा सि नी ग कि का सि का ही पा ० ॥ ॐ सुं स ४ उ गं ग र्य ४ ॥ ॐ सुं स ४
का सी काम ४ मं द्य प्र हा ॥ ग कि का सि का ही पा ० ॥ ॐ सुं सुं स ४ उ गं ग र्य ४ ॥ सुं सुं
४ ॥ ग र ग कि का सी का ही पा ० ४

नी पादे वदे वांश्या सादेवी मम न रुद्र क्रि ल द ड च ली ड यो न रुद्र ॥ स्त्रि
वाक् ॥ इ (ने वी प व मे ॥ नि ड ग र पी रु य क री ॥ जग न्मा ग वि ना ॥ य त्र व
ल र्वे स्त्रि चार व ॥ ॐ नित्य व के प न वि वि ॥ ॥ अथ पूजा वि वि ॥ १३ न न
छि का र्थ ॥ ॥ अथ म ना दि ॥ सूर्य र्थ ॥ अथ दि ॥ ॐ ऊँ कौ स ॥ स म द न न र्थ
रै व वा य पु का ठा ठा कि स र्थि ना य ॐ सा म र्थि य स्वा द ॥ ॐ ऊँ कौ स ॥ स म द
मा ग ल र्थ रै व वा य न म ॥ ऊँ प का स र्थि कौ न म ॥ ॐ ऊँ अ दि र्थ दि न व गु र्थ
ह्यो न म ॥ जा प ॥ १० ॥ का र्थ ॥ अदि र्थ सर्व का यो दी क ल मा र्थि रै व वा य नी मि

पु का स र्थि कौ व डु कि र्थि कि रु ल पु र्थ ॥ ॐ नि प र्थि र्थ ॥ ॥ ना स ॥ म ल्क र
व अ लु य रु र्थ ॥ ४ ॥ क व र्थि र्थ ॥ ॐ ऊँ कौ स ॥ अ पु र्थ क नि र्थ र्थि न म ॥ ॐ ड ग
व र्थि अ न मि का र्थि न म ॥ वि प म र्थि नी म र्थि मा र्थि न म ॥ ॐ ऊँ स द र्थ र्थ
रु र्थ नी र्थि न म ॥ र्थि मा र्थि स ॥ अ र्थि र्थि न म ॥ म ल्क र व र्थि क न ल य र्थि र्थि न
म ॥ ॐ नि क व र्थि स ॥ ॐ ऊँ कौ स ॥ अ पु र्थ र्थि र्थि न म ॥ ॐ ड ग व र्थि र्थि न
म र्थि र्थि ॥ वि प म र्थि नी र्थि र्थि र्थि ॥ ॐ ऊँ स द र्थ र्थ र्थि र्थि र्थि ॥ र्थि मा

१॥ धनममृष्यैर्वाच गंधर्वाचारुचक्रं ॥ मरुतं वष्टयित्वा तु नदीं च
विमर्ष्यते ॥ ग्रहनिपातका सर्वोच्चोत्तममन्त्रो ह वा ॥ ॥ अथो नोष्ट्रं ननवा
त्मानं पूजा ॥ उग्रचक्रं मन्त्रं नृपियां कृत्ति ॥ वृद्धचक्रं दि ॥ वृद्धा ॥ दि ॥
॥ वृद्धं गनपूजा ॥ श्रीवाहनादि ॥ यानिमूढा ॥ अथो नोष्ट्रं ननवा
॥ ॥ सुनि ॥ लाक्षासिंदूरवर्ष्मां कृत्तुमनितां जातिं सिंदूरवर्ष्मां साक्षाद
गुरुं कृत्तुं श्रीसिंदूरकृत्तुं देविदुका पांलरुका ॥ सिंदूरसुमीमां डगुसक
नृपयपदा सर्वसिद्धार्थकाली ॥ ॥ पूजनीयां सकलरुद्रनादे रुद्र

वी नमो सु॥ ब्रह्म गंधर्व वि॥ वृत्ति कैं रपूडा॥ ॥ क्रसकन॥ हौं नमः॥ सिंधु मं
 द॥ जौल नमः॥ सगन॥ कौं हौं विवठा कैं नमः॥ ॥ मोरु निरु॥ नैं कौं सा
 रिपू नीय सर्वे सना सना यनमः॥ ॥ नगो खे ज सुपन॥ खे जे य सुमलम
 कुजा प व०॥ ॥ मूलमने जे सुपन॥ इ (मेली गी कुआ बा यी धा कुरा कुरा
 यै के नी॥ प्रसनी सुजय दे दि, डग वल्लु नमो सुगे॥ ॥ गायता वा वस्ति ववा के
 ॥ सर्वल न्नी पवृष्टु थ सर्व धा कुरा ययव॥ श्रुष्ट म्या दि दहा मर्नै इ (मेली वि
 स्ति नी रव॥ वृत्ति निरु सुपन॥ ॥ नगो डग वल्लु पूजन॥ ॥ श्रीसन॥ ॥

ॐ क्रीं आ वा व ध क्ये त्यादि ॥ मरिद्या सनायनम ॥ सिंहा सनायनम ॥
शुं ता सनायनम ॥ निष्कु म्हा सनायनम ॥ ॥ ॐ क्रीं द (ने चै) नी कुं वा वा यां
कृप के कथं कवि प्रसन्नो उय ऊं दे विट्ट चालि नमो सुते ॥ ॐ द (ने र) र ग
वनिट्ट चालि आ ग क्क र स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ द्य च लु महा दे वा ध्या ये इ ग व
नी शिवा । तफ चामि क ना व लु ना ना प ध्या प सो रि ग ॥ दि वा सु प री ध ना म र्दि वा
स न ग मि नी कि री टि कू ट ला का बी के च न म ति नी पू र्व ॥ रत्न मा ला वि वि वि
ले हा उ मा ला व र्ण वि न ॥ त्रै लो क ठा ड्डा का ना पी न व क्क सु नू नू हा ॥ सर्वा र्ण का
व

व सैयू का ग ठि कौ टि सं म प र ता । ख न्न धू व ग था च कौ व कौ क्क ठा व वा लु ता ॥ व
व दं उ म र्च ये व ठ ल पा ग सु धा रि ता । क र्क ण न क वा ज ता य धा धा रा ग थ
शुं ता । रू ठ कौ व नू रु स्मा च ग दा य लु स धा रि ता । पा र्थि च नू र्नी रु स्मा ख ड्डा
नू कौ धा पा र्थ कौ ॥ वि न्द्र मू द ग थ मि ट्ठि ध्या ये इ ग व नी प र्वा । सिं हा स न स मा नू द
म र्दि वा पा द ग र्जि ता । ग ल्म खा नि न्ना ग दे त्या म हा व ल प र क म ॥ त्रै लो क नि च्छु
क न वा सो ख न्न रु स्मा म हा व ल ॥ त्रै लो क नि च्छु क न वा सो ख न्न रु स्मा म हा व ल ॥
उ र्व ध्या लो ड्ड च लु म हा र ग व नी न मो सु ते ॥ ॥ वा वा वा उ ठी रु स्मा च ख ड्डा

गडमरुविना। वृद्धचलुपचलुचलु (लु) रा वलु नायिका ॥ वलु वलु वमी
चलु रूपागी चलुका दृका। वचनार वलु कृन्नीला लुका वलु मिका ॥ पी
गव पा लु लारु या श्री ली ह सु रु वि सु ग। महि वा लु पमाने स्त्री ग व लु क व य
ह म हिका। सु पा व लु न प का वा ड य च लु दि न १ क मा ० ॥ उ व वी वा म हा
दे वि ड य च लु न मा सु ग। स्व पा वि वा न स मा य का न न या नु ० ० ह म लु ल ॥ ॥
० ० गि ध्या न ॥ ॥ म ल म ल ल गि यी अ लि ३ ॥ न वा स ना य पा ड का ॥ म य न वा स ना
य ३ ॥ म वा स ना य ३ ॥ वा स ना य ३ ॥ कौ के गु पा ना य पा ड का ॥ व लि ग द २

सा हा ॥ वां व ड का ना थ य पा ड का ॥ व लि ॥ मी ग ल पा नि ना थ य पा ड का ॥ व
लि ॥ यी धा गि नी री ॥ य पा ड का ॥ व लि ॥ ० ० गि द वा य ॥ ० ० य न म ४ ॥ अ न य
२ ॥ य मा य २ ॥ नै री यी य २ ॥ व रू ला य २ ॥ वा य व २ ॥ क रू वा य २ ॥ ० ० धा ना
य २ ॥ व रू ला २ ॥ वि रू वा २ ॥ व लि च ॥ ० ० गि द वा दि ग ॥ ॥ उं कौ उ या धि पा ड
का ॥ वि रु या य ३ ॥ अ रु ना य ३ ॥ अ प ना नि ना य ३ ॥ उं लि वी ३ ग रि न्ये ३ ॥ मा हि
न्ये ३ ॥ अ क रू ला ३ ॥ व लि च ॥ ० ० गि त्र द रू ३ ॥ ॥ हं सा स ना य न म ४ ॥ व रू
स ना य २ ॥ म य न वा स ना य २ ॥ ग रू उ स ना य २ ॥ मा हि वा स ना य २ ॥ ग रू स ना

[illegible]

लियाइलि ३॥ वलिच ॥ बडं गपूडा ॥ ॥ उं कौं ड्य चणु विमरुं दुर्गाद
 वीथीमदि नन्ना चलि पचोदया ७॥ वलिच ॥ ॥ गगन सरु साकनी ॥ वलिच ॥ व
 लि ॥ उं कौं कौं कौं कौं रुह ॥ यक नां रुसह गा ध्ववें गाला के गुपालका ॥ जकि न्य
 गथमा गा पटना ठेक पैडना ॥ पी ० गा के गुडा (खेवंग रुडा सरुडा रुध १२॥
 गगा मनु गा (खेव कुलडा ध्ववि (ठा वग १॥ नाना रूप धरा ध्वनाथ गिना वल
 वल ना नाना दिना निवा सिवा न्यौ श्रु मि नू चके समा गना ॥ समया से नये चा
 न्या गथ च वलि क कि ६॥ रुपा के श्रु से वे दिव्य गे न्य पूया दि रु रु धे ४॥

हफाकदनु मेका मान वांकि नार्थ दद सु मे ॥ १ ॥ १ ॥ रुठवलि गृदर स्वा
हो ॥ श्रीवाहन नादि ॥ यानि मूदा ॥ ५ ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ जोप ॥ जो सुी सा
हो ॥ ५४ ॥ सुनि ॥ माको ॥ यो विपद्रु पदता नय हो या वना वचके यस्म
प्रचरु निमनो वह विवक्क कल्यादे हो के दपु मदिन हा वस्मा गगन
पुवा मो यदे व्या रुवतु रुवता हो यसे ध्वनि काया ॥ ॥ श्री पयचन
वैद्य मो य मलय वासिनि ॥ ग हा व व द दे वि कल्या हा क म म सदा ॥

मनु ही न किया ही न रुकि ही न मरु ध्वनि ॥ यद विनि मया द वि प वि प र्क
न न सु मे ॥ ग ही न सा वदी पृक्षा म ए म सु ल से स्कि ना ॥ चालु के वन मा मय
स्व व मय पुनि गृह्य ना ॥ काये न मन सा वा चा वृ को ज्ञान्या गति म म म न
व्य व ल रु गाना दु द्वा ल प व म ध्वनि ॥ ॥ न यो ल ॥ ॥ न गों प धु या ग ॥
प धु दि वा व नी पू नै के म य ॥ श्री यो द के ना रि क ॥ ॥ ५४ श्री सा य रु द ॥
क व च ना व गु ल न ॥ ॥ ५५ क व चा य दू ॥ ॥ व ॥ ध नू म दा या श्री म नी क र्ण ॥
च न्द ना दि रि ४ पू र्ण य ॥ ॥ ५६ क र्क ॥ ॥ ५७ व ॥ प धु ग य नी २ प ॥ ०७ ॥ ॥

[illegible]

१ अग्नि की उषव कामि पुमाने पुनिलि कर्ण ॥ २५ ॥ मातन रुसं न अग्नि की उषव ल कर्ण
॥ २६ ॥ गुल कर्ण विन ह्यहो मयव सार ॥ कर्ण कर्ण द्वय यूकै दिन म क वथा

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ स्वोँ ह्रीं क्लृं क्रौं नमः॥ १॥ मूलविद्यानवाक्रीसिद्धिलक्ष्मी॥ ॐ ह्रीं क्लृं क्रौं नमः॥
॥ सिद्धिलक्ष्मी हृदयः॥ २॥ ॐ ॥ १॥ एकाक्रीं॥

[illegible]

रु सिवे वं धव वत्स गदि धं सा य प्र कृति वि कृता स्पा न नू वि र्वा क वे ख नू
 पा गो रु य व नू ध ग व क न य न ग मो नू पा धा ना व व रु य क नी वि ध्व विस या न ह
 को ला से ना दे वी मूँ ठ मा ला वि हू वत्स । प्रा रू या वू द स को भ मा हा मा नी नि वि गृ ता ॥
 नी ला नी वू रु का नि को न म नि नी नी ला ना दि व रू द द डे व वि र्वा ख ता नू व नू व स
 हा व को ला ने नै ॥ घ टा घ र्घ व धा व ना द म स कृ ता ला प नी गा न न व र्वा प न न ग वू उ ले
 सु वि म र्वा नै का लै का लै वि रु ॥ च म ख नू हि नू र्वा व पा ग म कृ ता मे व व कृ ता ल द
 रु व वी प व वा ले व रू रु ता रु वे नू ॥ १५ ॥ नी वी डी स गृ द्र व न ड वि रु रु ना वे वू वी को ल
 व कृ ता ॥ मा रु सि नू वी च वि का स्वा वि वि ध गृ ता यू गा व कृ ता धे व ल श्री ॥ रु नै ग वि ध्व ना ला वि

नि पा नि व डू को या नि नी के रु पा ना ॥ १६ ॥ को सा न क नू पा वि वि ध गृ ता यू गा पा रु मी रु
 नू च के ॥ सु रू सि नि ग ज य क न व वि च नू वि र्वा वृ ता व ल व व न पा नि वू ध
 रु का रु ॥ वे द यू गा दि ग प नी प व र्वा व ले वा न रु नि ग ज य नि स रु वि क नी म
 रु नी ॥ १७ ॥ सि ता वे दा दि म ये द ध नि क व पृ ठी व रू के का ल वी रा ॥ १८ ॥ वा स
 वी यू वी वी म न सि रु व व दा ड रु स वी नि नी ॥ १९ ॥ वा रू प्र दा ग व न क नै क द
 दा वि ध्व व रु रु ता फी ॥ २० ॥ ये नि यो प सि द्धा ज य नि प रू म दा वि ध्व वृ पा वि ध्व ना
 ॥ २१ ॥ ग वि र्वा मी रु गो रू व नि क व पृ ठा स रु ना नि ध वि र्वा सा न दा या ग

यूक्ता विदधति पत्रमा तावच्छता विष्ठाया निद्वेदना उरूपा नन्दनियन्तववा
 द्यावर्पावैधस्फाहीमदेवी ऊर्यगी उगदखिलनृता तावनि नोवदेवी ॥३॥
 कासागिस्त्रिसेगीवुत्रोदपत्रमाविष्ठासिकासर्वमेससावा विम्वृगऊग
 लो नृयरावात्मना ॥ यादेवी पत्र तावया के वयुतामन्येने गृहा वृतासो
 राग्ये सुखदा विपलिरुवत्तसा नार्ये वाकि ऊर्ये ॥४॥ ॥ गकै गै वेत्रमाध्य
 मेकवरुयकपिपा क्रणमायुसि राना नास्या याहि ध्याद्यधिकवयुता
 वन्नमालादिनृया ॥ नानादृष्टपद को विविधरुयदना द्यावर्पापैवध्व

दलयदा १
 सा रासा देवी पुमि सुऊर्यनि कय कवी (गुण्यसो म्मापवर्त्तु) ॥ विवधधीसयक
 विधीरुगवगीवुद्मादि वीमो कवी क्रियादि कृते गत्व गौरव कुरुणी हे व
 वाद्या ॥ पत्रा ॥ १॥ गृहा सुववर्त्तु गमादि ऊगता नीने कव्याना केवी स्वा गाधीप
 वमापवा पत्रा गीवाही मन्त्र या पादुमा ॥५॥ ॥ रा (गधी ऊगदे कव्याम नृते नृ
 रिता वा विरावा विरावा विना को (गुण्यसो व विरुगि रोग पत्रमा रिके के
 विष्ठा मासकसे व विवधऊननी वक्रा कृता पालिनी से यै धी ववरा गे रा वपत्र
 मा वा कि ऊर्ये लो कनी ॥ ॥ ॥ रुनि विरु निववदा पत्रमाथ यूक्ता का त्या स

पत्रं श्री॥२४॥ पागलादिभिर्वा तविश्वं न नीदुखं गुणं धर्मं सका निह्याख्यामि
 कनीति को नरुं कुं रं न्यप्रशवात्मिवा॥ यौ भे मलु लराव वा रु निधि
 वा पद्मं कलीना प वाना ना म्पा न नु स द वा रु ग व नी पा पी द्य वि धे सका॥१५॥
 कृचकं वलि ता सा न नू रु वि त वि रा रौ ग मू कि पु द्या ता व द्या या स द वं श्रीं
 नि निक रं नि शानि जि ता ग व वि श्वे ना ना मा ग व सि (५) गु द स कं न रु ना
 वि क रु व न वं (५) स र्ये या गी पु स रु वि वि ध उ य रु वा पा रु मा रु व रु कि
 वा सि भा मू र्वा मू र्ति न (५) व रा व प व मा ना ना खि ला द र्ना ना ना मा य रु स रु स
 ग ता प र जि वा ग रु क रु पे व वी स (५) या नि नि वे क वि श्व वि म ला वि

मूल २

मा रु रू पा वि रु ४ स र्ये श्री द द दि कु च वी वि उ य गा श्री म ल्प नी ला प ना ॥ ॥
 इ ति रु द्या दि को सि स फ द म रु द का ली रु ति रु नि र्ध वे ॥ ॥ १५॥ गु रू ज ये नि
 ॥ श्री द व रु वा र ॥ रि यु व द्ये न ये रु रु मू प दि रु प वा पु रु ॥ त य द द वी स सा वा पि रु ना
 पि रु व रु य य ॥ ॥ गु द्या ति गु र्ये क व र्च ना मा य दि व्ध म ग ल ॥ ग मा मू प दि (५) द
 नी ना थ रु ला क रु रु रु ॥ २॥ वि श्व म ग ल रु रु रि क व र्च न रु वि द्या ति ॥ य द व रु
 रु य पा क रु दे वा वि म म न ॥ ३॥ स रु स रु रु व रु ल पु पा दि ॥ पि स ल व रु ॥ या
 रु व म रु को ल न चि ना यि रु म रु सि ॥ ४॥ श्री म रु का ल रु व रु ॥ सा रु व रु ना सि

देवमिसाधुसाधुपुनः पुनः ॥ यन्ममना निवस गेक वच विधुमै गलन ॥ १॥ यदे
 वाक्मदं पूर्वव्ययि सिद्ध्य नय नसा ॥ विधुमै गलन दुर्लभं दिक् वर्चन रुविश्रुति ॥ ३
 ॥ तस्यै नाग सैदेह ॥ कलै वां ॥ कमला न नय ॥ एक गोमन व ॥ सर्वे क वच ॥ ली
 चे न दे क ग ॥ १॥ ॥ तुलया विधुमै पूर्वमिदं गति विधुमै ॥ क वचानि तु रुया सिगुधा
 पार्स नि पावैति ॥ ४॥ ॥ गानि नै गसा दुल्या नि सत्यं सत्यं वदा मारु ॥ प० नीयं पु यत्नेन
 धा वलीयं स्व विगुह ॥ ५॥ ॥ गप नीयं सु गे सापि न दान वी क थं चने ॥ नै कापि मे ग
 ये श्री साद्रु प दिष्टा वचान नै ॥ १०॥ ॥ नै न न दै पा० यमिति ॥ ११॥ पुन वचान न सा सन ॥

जयमल ल ३

अगस्त्य गाम्म मल्ल्या य ॥ १॥ ॥ सिद्धि वां कृया ॥ १॥ ॥ स अगु निधने या गिं गुल्ये काली प
 कोप ग ॥ सा वं वना ॥ १॥ ॥ क वच विधुमै गलन ॥ १॥ ॥ असाधी विधुमै गलना मोति
 तुल्य काली मदा वं क वच सा सै वरु क स वि ॥ वनु हृ प र्क द न क व क दि ग न व
 को गगुल्य काली दे व ग र्क वी र्क र्क ॥ १॥ ॥ की की ल क स वी री ह सिद्धि पूर्व का
 ल व न ॥ १॥ ॥ विनि या ग ॥ १॥ ॥ उं र्क पा उ नि व ॥ सिद्धि क वाली को लि काम म ॥ १॥ ॥ की की ल
 ला र्क म सिद्धि वि क वाली सदा व ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ श्री की मुखे वं उ या ॥ गग्नी व र्क रु स व
 वा ॥ १॥ ॥ की क र्क व क का पालिनी मे कालिका व ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ उं र्क रु न काल सै क र्क

जगत मय २

लीमपातुकासिका॥ ऊँ क्लीं छु वा वृग्र च उ कासिका मे सदा वडु ॥ १९ ॥ ऊँ ज्ञं
 नरु सिद्धिलक्ष्मी ववदुषल्लंमम ॥ ऊँ ह्रीं नासा च उ कापालिनी मे सदा वडु
 ॥ २० ॥ श्रीं इं श्रीं द्यावपौ पातु सदा समय कृत्तिका ॥ गूं गूं दं गान् वा रु वा रु ग्वेनी
 मे वं रुता सदा ॥ २१ ॥ कूसं सदा मे वसना पातु ग्रीड यरु ववी ॥ हूं हूं पातु
 खर्क कृठं ग्वेनी चिक्क मे सदा ॥ २२ ॥ वूं वूं कं ठं मे वं रुतु सर्वदा पातु ग्वेनी
 ॥ कूं कूं मे वा रु मा रु गी स्कं वं रुतु सर्वदा ॥ २३ ॥ ऊँ ऊँ रुतु वडु च उ ग्वेनी
 वं रुतु सर्वदा ॥ हूं हूं वं रुतु ली पातु कय क ग्वेनी मम ॥ २४ ॥ ह्रीं ह्रीं कं वी व
 हूं हूं

उ ३

रुतु मे भिवदुगी च सर्वदा ॥ ऊँ ऊँ मे रुतु ० वं पातु हूं का वी धा न ना वि ली ॥ २५ ॥
 हूं हूं गुह्यं ग्वेनी ना हि मम वं रुतु सर्वदा ॥ कूं कूं पातु सदा पातु वा रु वी
 धा वं रुपिली ॥ २६ ॥ गूं ह्रीं कूं ग्वेनी मम पृष्ठं सर्वदा ॥ कूं कूं कटिं वं रुतु
 मे रुता मा देवी रुयानका ॥ २७ ॥ हूं ह्रीं मे वं रुता दू वं सर्वदा च उ ग्वेनी ॥ हूं
 हूं जानु नी मे का वं गी रु वल्लनना ॥ २८ ॥ गूं ह्रीं उ वा युगं पातु ताम सी सर्वदा
 मम ॥ हूं ह्रीं पातु मरु विद्या सर्वदा मम वं रुतु ॥ २९ ॥ ह्रीं ह्रीं वा गी ग्वेनी सर्वदा
 धिं दे रु सा मे वडु ॥ हूं ह्रीं वनी ववा उ मे का मा र्वा सर्वदा वडु ॥ ३० ॥ वीं वूं

[illegible]

शुकांगवदस्यसंगे॥ गुरुद्वयसपिबुनसिलेवाभीमिर्वचसे॥ ३३॥ निबोदावा
 निसंदीपेगदनेसुखेवदिते॥ गसारीतिनेकेणपिचनन॥ पृथिवीसिमि॥ ३४॥ न
 चवाधिरुयंगुस्यनेवनस्कनडंतय॥ हीतिष्वगुरुज्ञानासविषडंतयनदि॥ ३५॥
 नाग्रास्यागानेवरुतयेतड॥ संकठसुथ॥ विद्युद्वयोपलरुयनकदापिपुवाधने
 ॥ ३६॥ नदुलिकेरुयंगस्यनचमावीरुयंगथा॥ कृत्वातिवावकायावासाधंल्येनक
 दापिने॥ ३७॥ सरुमुजपगव्यसपुववववमचाते॥ गत्कृत्वापुपुयुजीगसर्वेस्मिन्न
 पिकेमीले॥ ३८॥ वय्यकायेमाहनचमाने॥ आहनेगथा॥ सननेचगथाद्वयेग
 थकृत्वातिवावेयो॥ ३९॥ दुर्नेतंगगथायुद्धपनचकनिवानले॥ जनत्ययोगासर्वो

सिकायां लिपि विमाधय ॥ ४० ॥ हूता वेगं नाभयति विवादे जयति द्विष्ट ॥ संकटं गतिरिति
 प्रकलं जयमाप्नुयात् ॥ ४१ ॥ यदीकं महीलु अंतनयाना युवं वच ॥ विद्यां कीर्ति
 गत्थे तर्ह्ययं आनाय मे वच ॥ ४२ ॥ वेगं महीलु विद्यां हानि मना लस्य महोदय ॥ ४३ ॥
 ॥ अथीदि कवचं नित्यं मम ना मूचय प्रियं ॥ ४४ ॥ कवचं ना मुना सर्वे स साधयति
 साधकं ॥ यद्यद्यायति चेत् न न सिद्धे कलुषं न किं ॥ ४५ ॥ इदं च दयत्येनं क
 वचं विष्णु मंगलं ॥ विश्वं समं गलं यस्मादतादा विश्वं मंगलं ॥ ४६ ॥ सान्निध्यं का
 वचं गुह्यं का ल्याद्यं गलं कीर्ति ॥ निखिलं यद्गुरुतिष्ठेत् कथं केपिलं मयुते ॥ ४७ ॥
 यदि कृति सुने भानि सर्वं जय मंगलं ॥ ४८ ॥ च वच ॥ यस्व कवचं विष्णु म

न ३
 गलं ॥ ४९ ॥ संपाया सिद्धिं गच्छायां राकि मे वच ॥ वयेति संध्य प ० ना
 देवि सर्वं पापं प्रमूचये ॥ ५० ॥ यस्मै कस्मै चिदयेत नूदं दद्यादिति विबुधा
 दत्वा मंत्रं साधुति सुसुगलं निवाधव ॥ ५१ ॥ सिद्धाय राकि युकाय साधका
 यद्विनायच ॥ विधि पूर्व उदातव्यं नारकाय कदाचन ॥ ५२ ॥ षण्मायस्त्रिंशद्व्यास
 वशिष्ठ उवाच ॥ यत्नं सर्वं नमसां गम्यं सत्यं सत्यं सुखं श्रियं ॥ ५३ ॥ यास्मिन्
 कस्मिन् नपिमनायु पदे गम्यादेषियं ॥ गदेवा गंधिका वस्या के वचं विष्णु मंग
 लं ॥ ५४ ॥ गुह्यं का ल्याद्यं सदा राकि ॥ आदं गभ्रिका रापे ॥ इदं कवचं देवित्वे यो
 वा कथिता मया ॥ ५५ ॥ अथ सांख्यिकी या मेता च उर्वरं सिद्धिं ज्ञानय ॥ रुद्रो रा

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

२ कलकौस मलय वलिगुह रकुं हृदया ला ॥ प्रउम मावा अ ॥ कौरु सजी ॥ जाप ॥ १० ॥ हुं संखा ला ॥ १० ॥
 सातु ॥ ला का व स नित को वा विन्द पातु व वा रु या ॥ प च भ कि प्र वा ति यो न मा नि इ ज ने दा पि नी ॥ ध्या न ॥
 व द्र षे ना स न स्फु टि क सी ली नि ता पे य व कु जि न्ना ॥ उ ला के मो रु नी ये रु ड द ग पु यू गा दि व्य व
 सुा क तां गो ॥ वो मे को पाल ग्ल स द व ल द म हा म र व पा म र व न्न व रु नी द्य रा च कु स न स्फु रु य ग्ल सि सा हि ता
 सि द्वि ल श्री पू ना तु ॥ भू त ग ल्पा दि ॥ ॐ ति थ ठ फ ऊ र्ण ॥ ॥ मू थ म हा वा ठ फ जा ॥ श्री श्री सर्व म न्त्रा स न पा
 ॥ २ ॐ काम रु पी ० श्री पा २ ॥ २ श्री पू ल्नि मि नी पी ० श्री पा २ ॥ २ सो जाल न्ध र पी ० श्री पा २ ॥ २ उ श्री श्री
 उ था न पी ० श्री पा २ ॥ २ म लु ल श्री पा २ ॥ २ खुं क नि बं ड न त ख श्री पा २ स न पा ॥ २ खुं मं नी
 रूं ॥ ३ ६ म प्र दे द ग क ला त्त ते अग्नि म लु ला य श्री सि द्वि ल श्री दे वा या र्घ वा ज्ञा स ना य न म श ॥ प्र का लि त वि प
 दी नि धा य ॥ श्री पा २ प्र का लि त च उ ग्र मे न ले पि ते सू य पि ते नि धा य ॥ फ ज ये ॥ २ खुं ला हां कूं हूं उ वं सु प्र दे

[illegible]

यं मैलें वं वं कं कं वं न मरुत यवलि न कृ २ कूं रु रु स्वाहा ॥ जाप ॥ कूं स्वाहा ॥ १० ॥ उं याति मूत्रा
॥ खुं कूं श्रीं सिद्धि वलि नी कूं रु रु ॥ सा ॥ ३ सुं न डं नामा सी देवी जात संपद दाय
कं । सर्व विद्य विना माये सर्व अय विमाचन ॥ अरु गन्धादि ॥ ॐ ति कं श्री पूजन ॥ गंगाई
पाक पूजन ॥ द कं का ॥ ॥ कूं श्रीं खुं ग त्याम कं कमला सन पा ॥ ३ अरु पाकात्मन नमः ॥ ३
सं मैलें वं वं यं नाम सी श्री पा ॥ ध्यान ॥ काटि मय्ये प्रती का मं सर्वो ह्य ति मना रु रं विदु पा
उसनी पक्षी नीला पल सुगन्धि ॥ गं जात सात की देवी विदु म कि न मा सुगं ॥ १० सं मैलें
व वं यं क्रिया ग कि श्री पा ॥ जिया ऊं लि ॥ ३ वं न म द्या वं कूं द्या नाम स्त्री व म र वि व र रु र र
कूं सी ॥ ४ कूं रु रु कूं कूं विद्या ग त्या वि प त य क्रिया ग कि प नी म नि व ल का लि का देवी श्री पा ॥ ३ उं

ओमका व ग रु ला ॥ यदु का स न सै कि गं म लु सिद्धि समा स्वाता क लु न्नी न न मा सुगं ॥ वलि ॥ ३
पा क उ म र्क य व लि न कृ २ कूं रु रु स्वाहा ॥ जाप ॥ खुं स्वाहा ॥ १० ॥ कूं श्रीं खुं रं व नी मूत्रा
॥ सा ॥ पा क उं नाम सी दे वि काम सिद्धि रु ल पुं दं ॥ सर्व ध प वि नि म्म कं सर्व भक्ति क
वं प्र वं ॥ अरु गन्धादि ॥ ॐ ति पा क उ पूजन ॥ ० ॥ अरु धा लु उ पूजन ॥ अरु का ॥ कूं श्री
खुं अरु नि ला ऊं न प द्या सन पा ॥ ३ वरु का पा लि न्नी न म ॥ ध्यान ॥ पक्षी च नु समा रा
सां जि न्नी उ व व डुं जा ॥ पक्षी पा उ व ता देवी व व द्या क म ला रु या ॥ गं काम सात की दे
वि व द्या ग कि न मा सुगं ॥ १० सं मैलें वं वं यं न म कि श्री पा ॥ जिया ऊं लि ॥ ३ न मा रु
ग व ती सिद्धि ल श्री ग व ती रु रु स्वाहा ॥ खुं वं ॥ अ न म ग त्या वि प त य न न ग कि प नी

यनिर्वाहचलिकादेवीष्टीपाद२॥ वलि४॥ ३-मैलववयुं अलुजायवलिगुद्र२दुंदु
 ठसोहा॥ जापया॥ २खुं स्वाहा॥ १०॥ २खुं उस्तादिनीमूडाः॥ स्फोट॥ १० तस्मादायतिनि
 स्तनमरुकेववमेयुः॥ अष्टाष्टकनुं नदनकलुलीगनमासुते॥ अलुअं काममी
 दवीसर्वसुस्तनकाविली॥ वागसाकरयेनास्ति सर्वसिद्धिप्रदायनी॥ अष्टगन्धा
 दि॥ १००॥ लुठपूजन॥ ०॥ ततो आनन्दचन्द्रपूजन॥ आरुचक्र॥ तिलमार्कवयाणाक
 सवनेन्दकवीस्माराकालवचनदुष्टे कालकालीनमासुते॥ ऊंष्टीं खुं कालीमर्क
 वनस॥ ऊंष्टीं खुं आरुचक्रसनया॥ २खुं महाचलुयागवरी कालकालीदुंदु

॥ ०॥ न॥ नीलाऊननितादहं चतुर्वीरुहिसावनं॥ खड्गदुष्टनदेवी पूर्णपात्रकन
 दयती॥ अलिमसिबगानित्ये विष्टसेसावरीगानि॥ आरुचक्रस्तितादेवी कालकालीवि
 नागनी॥ त्रियाऊं लिवाय॥ ऊंष्टीं खुं कालीकपालिनीदुंदु२॥ ऊंष्टीं खुं अं वलनअन
 नलोकलोगमकुं गानिनीअनन लोकसेवाविलीअननोनन्दनोथअननास्वापव
 मिवानन्दपवमकुं स्वायागीतिनित्याष्टीपाद२॥ २खुं हं कंदमसववयुं आरुपी००
 आरुहा॥ कनीयेपूरीष्टीअखलीगननन्दवपा२॥ अकालरूपिलीपराआरुनाथदेवष्टीपा
 ॥ वलि४॥ खुं दुं कं औं वलिगुद्र२दुंदुठसोहा॥ दुं महादुष्टमूडा॥ जापयाय॥ खुं
 स्वाहा॥ १०॥ स्फोट॥ २वदुसूर्योनिवित्तुस्तुवदुमातुनिर्गता॥ अष्टाविंशतिमंदवकलुली

मन मो सुते ॥ मूनादि द्यावे संसावे मज्जनति सिला पहें ॥ सर्वे अपविनिर्मक माझा नीतन मा
 सुते ॥ भूतग द्यादि ॥ ॐ पा न त्य च नू पजा ॥ ॥ तं ४ सर्वे च नू पड न ॥ विबुद्धि चक्रे ॥ की
 धी ॥ खु ॥ सर्वे च नू मूर्तये धी पा ॥ भ्राष्ट्र पविका नाथ्य की वचिना सति सुथा ॥ मर्क वा
 द धि न मा व्य मयू ॥ व्ये वा ह्य कौ च नू ॥ ३ ॥ विबुद्धि चकी सन या ॥ व्यान ॥ व्यामा व र्षे प
 ती का ॥ वडु द्या ॥ तिला च नू ॥ ५ ॥ तले पद्म रु र्क च म हा पा ॥ क वे ॥ ६ ॥ सा का द वी म हा
 ल ॥ श्री ॥ न्य ना सो प वि स्मि त ॥ ७ ॥ य सर्वे च नू दे वि सर्वे स मा लि दा य कः ॥ ८ ॥ ति ति या ॥ ९ ॥ लि
 १॥ की धी ॥ खु ॥ सम ल व न य ॥ सर्वे च नू धी पा ॥ १० ॥ की धी ॥ खु ॥ नू वा ॥ न ग्य वी ग ग न ला क शा ग
 ग र्क ग मि नो ग ग सा म न सं वा वि ली ग ग ना न क द व ग ग नो म्वा च डु र्क का टि सि द्धि थु

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीगणेशाय नमः ॥ कौंठौं खूं हूं महासिद्धि लक्ष्मी श्री श्री कौंठौं मलव नमः
विष्णुसिद्धि किनीपुत्रिख श्रीगणेश नमः ॥ कौंठौं जूं लव नमः सर्व च नमः
श्रीपा ॥ कौंठौं नूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥ कौंठौं नूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥
श्रीपा ॥ १० ॥ कौंठौं खूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥ कौंठौं नूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥
कौंठौं नूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥ कौंठौं नूं कौंठौं सिद्धि का सिद्धि लक्ष्मी ॥
पुत्राय नमः ॥ सर्व लक्ष्मी नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ० ॥ नमः खूं खूं खूं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हंति द्वितीयं प्रथमं ॥ खंच वं अप्रति मूक्तं ॥ खंच वं प्रलमा मरु ॥ सौं कोउं यमनव वयूं
महासिद्धि खंच वं प्रीपा ॥ कोउं खूं नाश्रुत यकुसन पा ॥ ध्यान ॥ शुभनन चै ॥ श्री गं दि
वाहू येति लावन ॥ विभूसे वा के मालाच ॥ गगनादि वरु पिता ॥ खं गनु गमिनी देवी अना
न प्रथं स्तिता ॥ कोउं खूं वमलव वयूं महासिद्धि खंच वं प्रीपा ॥ थं ति वीरुती ॥ १॥ ३॥ कोउं
मा कं कं २ सू वल स मे ला क राग गदं गमिनी सुख ला का म तं चा वि ली खं गी न न द व स्य
मो मा व नी ल के का टि सिद्धि यो गी नी प्रीपा ॥ कोउं खूं कं १२ वमलव वयूं श्री ना रुत वा किनी
ये गुण पूनी निष्ठा स श्री विद्या न न द दे व प्रीपा ॥ २॥ कोउं खूं सू खंच वं मरु ये व ली मरु २ कं रु
ह स्वाहा ॥ ३॥ ४॥ श्री क र्वली मूखा ॥ आप ॥ सू स्वाहा ॥ १० ॥ २॥ खूं व ३ कोउं स्वाहा ॥ स्वाहा ॥ वाहू म

संस्तुत ॥ वदु विमल समायुक्त मन्त्रि स यो के रुदि न ॥ मृदा विमल कु मं देव कृष्ण ली गन मा सु
त ॥ अत्र गथादि ॥ ६० ॥ ति खंच वं प्रीपा ॥ ० ॥ ॥ गी रूच वं प्रीपा ॥ मलि प व क च कं ॥
कोउं खूं रूच वा य प्रीपा ॥ व वा रु रूच वं ॥ ६० ॥ मन्त्र का म प्र सिद्ध ये न रूच वं अप्र ना म
थं न न रूच वं दे व ना ॥ १॥ वमलव वयूं महा रूच वा य प्रीपा ॥ कोउं खूं मलि प व क च कं
सन पा ॥ ध्यान ॥ व क व र्ण म हा ते ४ ॥ १॥ विव कुं ति ला व नी ॥ खं खं खं द्रु रूच वं म क
पा ॥ १॥ मलि प व क च कं ॥ म क वा स न सौ स्तिता ॥ १॥ व रूच वं व रूच वं मरु दे
व यो सु व कं ॥ ति मा उ रूची मा य ॥ कोउं खूं ल म व व वयूं महा रूच वा य प्रीपा ॥ २॥ खूं स
हं न ली य सू वल स मे ला क सर्व रा ग म ली सा क स चो वि ली म ली नि न द दे व म ली म्नी श्री

[illegible][illegible]

[illegible]

श्री 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नमः यविद्वदे जातये दायवी मही. ततो दीपप्रयादया ॥ ॥ ततो दीपप्रमलः ॥
स्वस्तिकौलिक सर्वेश्वर स्वस्तिमस्तु प्रदोषय न साधका रुदयाकु वृश्चा ज्ञानननमोस्तुते ॥ रुद्रपनालितप
ना स्वस्तिकुलानि देवता स्वन्दिता देवता सर्वशक्तिरूपनमोस्तुते ॥ तामयैति तय दीपैर्दोलनै वापनासनी ॥ दह
न्नि सर्वपापामि सफज्ज नमस्तुता निर्वेश ॥ आवाहिक मिदं दीपै सर्वगतिमिवापहं ॥ सर्वदीपा वत्सा कनुप
विगुं देहसाधयै नृनी ॥ सर्वशक्तिकवी देवि विन्दिता गणेश देवता स्वस्ति शक्तिसदालक्ष्मी स्वस्तिकुं दे
नुमंगल्यै ॥ ॥ ततो दीपप्रसासनी ॥ कासवप्रवियमस्तु ॥ काली वप्रसदे ततो दीपदेव आदीनस
गलक्ष विद्यया वाक् ॥ ३ आत्मगता वाहिसोऽऽ कलनेऽसमूहवै ॥ प्रकीर्तय हृन्नेका (नमो सा
हं दीपशक्तिरूपकः ॥ ॐ श्रीमते ३ वा ॥ स ३० ३ श्रीमता रुवे श्रीमता लक्ष्मी स्वाहा ॥ श्रीलक्ष्मी नमो ॥ श्री
श्री 'आतिरूपे' इहामि स्वाहा ॥ पाठसंवननी ॥ प्रकासा काम रुसाहाः मवने वा मनी ॥ १ ॥ ४ ममो ॥

मोरु विद्विषो मन्मानो पुशहा मरुहा दाना ॥ १ ॥ नतः (मखन प्रासनः) ॥ कौशौ (मखन वीर्योद प्रकाश) स
वैतल्य स्व रूप कः ॥ वल्लभ रूप मय विद्याः ॥ नाना (मि) संशुद्धा मरुहा ॥ उँ उँ स ४ म्र म्र २ (मखन प्रासया मिस्वाहा)
॥ कौपात पूवर्णा ॥ श्रीमहै वव (मखन वीर्योद प्रकाश) ॥ १ ॥ नतो जलचर प्रासनः ॥ २ खुँ कावून प समस्त नै म स्यैव
व्योत रूप कः ॥ म (मै) प वा मि क वै व उँ स्वाहा संशुद्धा मरुहा ॥ कौ कौ स्वाहा २ जलचर प्रासया मिस्वाहा ॥
कौपात पूवर्णा ॥ सर्वे प्रायिषादि ॥ २ ॥ नतो रुचर प्रासनः ॥ २ खुँ सर्वे नता यून धा वं जा गलं का
ल नृ पिरी ॥ न त्वं न चा वि दायू क ४ प्राप्ता या (मै) पुशहा मरुहा ॥ नै वूँ श्री स्वादय २ रुचर प्रासया
मिस्वाहा ॥ कौपात पूवर्णा ॥ रुतु ४ सिद्धि न सावर्ण ॥ ५ ॥ नत ४ खेचर प्रासनः ॥ २ खुँ त्वं ग स ग्मा म मं दोष्टि
उकथा तु ख रूप कः ॥ न मा स्यै त्वया माद्य पय न्द्रिय शहा मरुहा ॥ २ खुँ पव २ मथ २ हूँ ३ खेचर प्रास
या मिस्वाहा ॥ कौशौ हँ से सँ पात पूवर्णा ॥ उवाँ रुद्धि न सावर्ण ॥ ६ ॥ नत ४ सर्वे चर प्रासनः ॥ २

खुं पाण अन्ना प्रवर्द्धने वन्न पाण प्रवर्द्धे मस सिद्धि कालि महा कालि वन्न क क कू रू रू स्वा ला ॥ ॐ ३ कि
 लि २ कू ३ रू रू सर्वे वन्न पाण या मि स्वा ला ॥ ॐ पाण वन्न ॥ श्री मन्म ज्ञान पाण सं वि त ॥ १ ॥ न न अ
 नन्द वन्न पासने ॥ २ खुं ही २ महा सिद्धि प्रवर्द्धे व महा ग्या न प्रथा थ क २ महा मल्क विना मय
 काल काली ने मा सु ने ॥ खुं हू कू कू रू रू अ नन्द वन्न पाण या मि स्वा ला ॥ खुं ॐ पाण वन्न
 न ॥ श्री को म दि वि ता सि ता ॥ ३ ॥ पञ्च कू म या नि ना सम र्थे ॥ मन्तु ॥ ॐ श्री ज्ञानो क्रि या मा वि भु र
 गु ल न उ त्या दि ॥ ० ॥ अथ अण्ड पासने ॥ प्रथम नय व न र्थे ॥ प्रि ति पु न ॥ नै ॐ श्री ४ वि भु र २ सर्व
 या पि नी अण्ड पास या मि स्वा ला ॥ हू २ सं २ पाण वन्न ॥ सत्क र्मा थ क न कृत मि ति ॥ श्री का
 ला व र्द्धे रू पी त्या दि ॥ १ ॥ अथ कू पाक पासने ॥ द्वि ती या थ व न र्थे ॥ अथ वि भू ति त्या दि ॥ ३
 कू नू कू म थ २ पा क पास या मि स्वा ला ॥ हू २ सं २ पाण वन्न ॥ य स्मा र्थ स र्व प्र ली य ने

ल्यादि ॥ या देवी मा (न) (न) ॥ ८ ॥ अथ कर्षण सनः ॥ हृत्तीयदवनव्येसः ॥ अहिना सा ॥ १ ॥
 क्रीं क्रीं क्रीं स्वादय २ (व्येदं) सा सया सिद्धा ॥ हं रे सं रे पां हू य न वं ॥ अलि पि मि त प न न्थी ॥
 या ॥ किं ४ प न मं छि नो ॥ २ ॥ त न ४ स म यो न क प ल्लो ॥ व ह्मा णी (म) य द ग्ना ॥ वं का य चू तु ठ
 कि नी त्या दि ॥ ३ ॥ क्रीं क्रीं 'खूं' स्व (न) यो मि न सा त वं ॥ ज य कि द य ॥ पु मी द प न मं छि नी स म रु
 दि पु सु त न यः वि द न य द वि ड तं द न य द हि स र्व रू नाः ॥ वि (व) दि क नू ल नि (व) च न व य
 म य म्म स्व क वि द वि त ज ला म लि वि द न व दि न थि प वं ॥ ३ ॥ क्रीं क्रीं 'खूं' क्रीं क्रीं ॥ म च
 व ह स म हा य नु य ड ग नु य व वि ॥ म हा मा या ॥ वि र्वि ठा द लु क ॥ का 'ली' सु ठ ॥ पा ० या
 ॥ व सि न यो ल या य ॥ प्रे त थु त ॥ ० ॥ रु मा सु ति ॥ श्री मा त ४ सि द्वि क म न्य व न नि वी स दा
 यि ने ॥ श्री गु ना व्च न ल म्का रु सि द्धा मि त्वं तु सा द न ॥ अ ह्ना न नि मि वा (न) हं न का ना

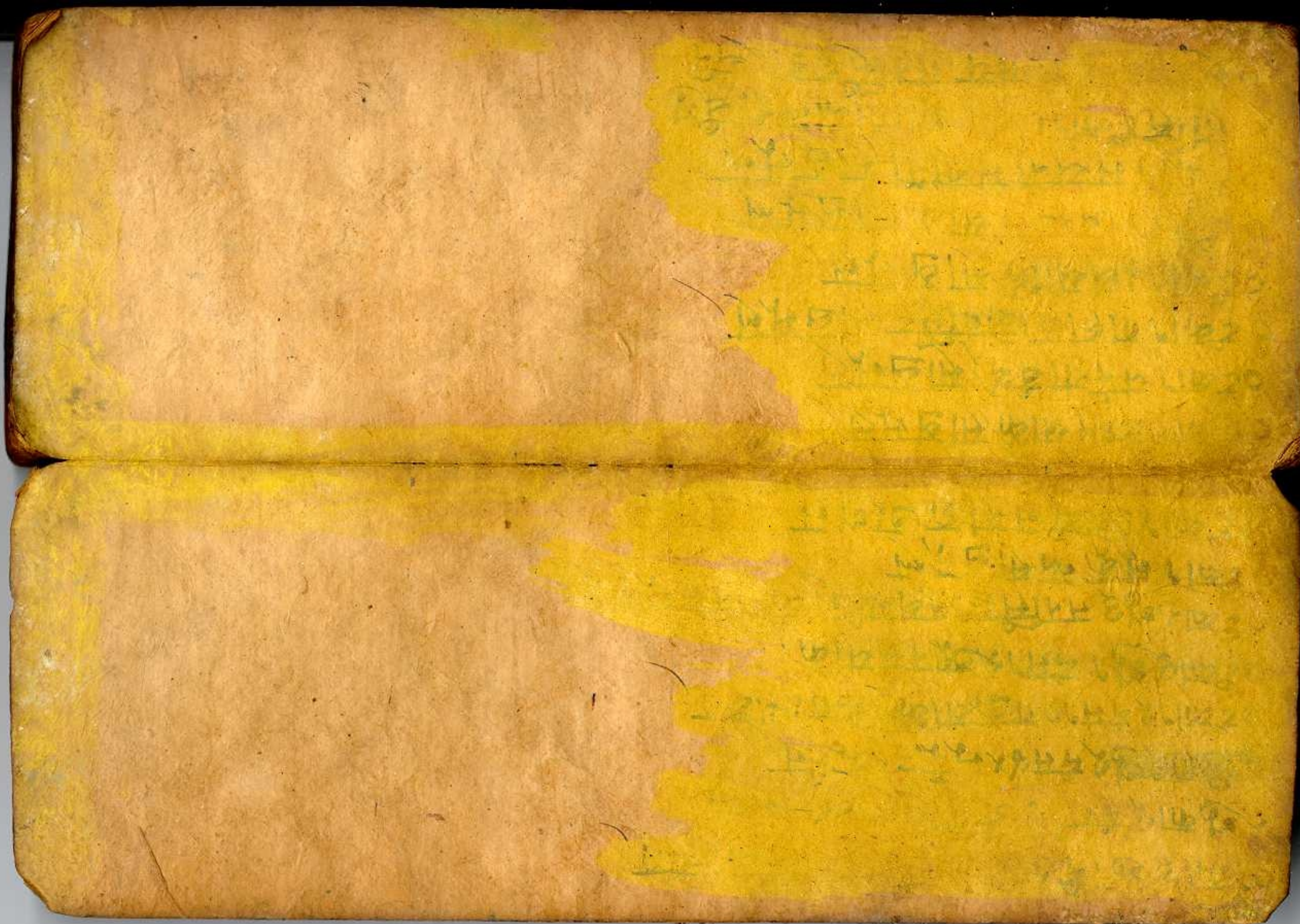
विमलं व्यविः क्रम्यतां क्रम्यतां स्यान्नि क्रम्यतां क्रम्यतां क्रम्यतां क्रम्यतां ॥ आवाहनं मन्त्रं पञ्चाङ्गं मुनि
विसर्जनः ॥ मम मानस्य दामस्य क्रमस्य पञ्चमं व्यविः ॥ विद्यायां क्रमं ज्ञानं लवणं त्रिधा ॥ दधिर्विधिः
माया पुष्टिः मिमयः पञ्चापाश्चैतानि च स्वाभिः ॥ इति क्रिया नैकं ॥ १३ ॥ प्रसादं गुरुः समीपं विजिगृह्य
महताः संसाधनैः केसावाः ॥ पुनस्तथा यत्नं ॥ अथ स्यात्तु मा ॥ इति नां विधिः ॥ कथं कथं
मन्त्रिनिर्वापयवकुः ॥ नमामि ॥ देवाः जयन्ति सर्वे ॥ या देवाः समस्तं ॥ देवाः दाता यज्ञाकाच
साहं भित्तिभिः सिताम्बुनादिकं गृहीत्वा ॥ १४ ॥ इति विधिः ॥ पञ्चाङ्गं संपूर्णं प्रक्रियते ॥
कैकल्यककापालिनीवाः ॥ अलिनी कुरु ॥ गुरुः पञ्चकनैः संपन्नः ॥ अग्नौ नय ॥ पञ्चा
वाधनं काशेयं ॥ पुनर्वा विजयीत ॥ आत्मनियं विनीयं कुरु ॥ १५ ॥ इति पञ्चाङ्गम् ॥ ॥ च

रुके सिद्धि दं प्राकं दीया ह्य न पुत्रा धर्मा पासा त्वव न व प्राप्तिः कालिक उ य मूक मः ॥ कां श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॥ नवात्मा २ ॥ ॐ श्रीमते ३ वां ३ सौ ३ ३ श्रीमता इवे श्रीम न सूचये स्वाहा ॥ सु
॥ सुत्तवी ॥ ॐ नि शु मिद्धि लक्ष्मी देवा या व दूकता विधि समाप्त ॥ ॥ १ श्री मत्कृ क व (ग ख लो पु
विलसं द्यु मा न प्रावि तं कं गंधी भव या मी नी गल सहा सिद्धे १ समा ना धितः ॥ श्री न द्या ग म नै य धा
न क मि दं सा का ति खं ग म तः ॥ गृया ग्रं पु थ मं सम स क र ग तां न द्या य व द्या म द ॥ १ ॥ सर्वो प्रा य क ला क
ना प क लि तं श्री कृ र न द्या रि तं तु से पे नु म रु कु कि न न ग ले १ न द्या दि रि १ से वि तं ॥ १ ॥ श्री दे व
ग ले १ सु वे म्म लि ग ले मा ना थि रि १ सर्वे दा व न्दे पा उ म रु द्वि ती य म धू ना न द्ये क र्से व र्द्ध न ॥ २ ॥ द ३
१ सिद्धि न स व रु द यि त या वा द र्थ वी द्या दि कं कि वि द्य के न व क र्प क र द १ म सु (य य सी व दि ता ॥

आ वा यो वि न सर्वे न सर्वे ना तु क क ला न्या से न से द रि ता व न्दे पा उ म रु त्व ती य म धू ना
वा सा व वा ध क र्मी ॥ १ ॥ ॐ श्री वि न सा व रु रु वि रु ने पु सा दि रि १ से वि तं १ मू डा से धू न व म्म
क र्मे सु व दं का ला न्दु ति का स क र पा रं स्वा द्द सम स क ता तु क क ला पा ले नि धा या न्म नि व न्दे पा
उ म रु म का व स रि तं पा रं व तु र्थ र रु ॥ ४ ॥ श्री म न्म द्म ज पा उ से वि त म रु म रु र्थ र रु यं जा य रं
का मा कं द र न वा ड पे म्म स व स दि द्या द्म ला ना धि तः १ म कि सु ति रु प १ पु यं व व दि तं स सि क
व सा ग्ध तं १ म किः १ म सु व म रु वा ड स रि तं पा रं रु रु त्व र मः ॥ १ ॥ श्री का न्म दि रि १ सा सि य
व व द नै त त्या र्म कं सु यं रं वा उ द्दं स र्वा व सा वि मू दि त सा त रु म न्म वि तं १ म रु ति व
स म यं पु स न्न व द नः १ म किः १ स यं रु र्ध्व वः १ रु नै स र्वा म यं पु स न्न रु ग तां व न्म प रं या नि ना ॥

[illegible]

सर्वान्प्रजासु सर्वान्प्रातुर्वः ॥ १० ॥ दीपयामावुष्माधी (मस इन्मीग्रु हवदू मल नाई नवाक
उताथे वेतावादिवा नृपागुरुव ममनया यक व के हली न्या ४। मून्ये रुचन खेव मादिमि
वना पुंतादिमावागु हा ॥ १० ॥ स्फ ४ क ल फ उ क स्य पिवे ११ पानं स दी पंच नू ४ ॥ ११ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ सर्वदुःखहर्त्रे नमः ॥
सर्वपापहर्त्रे नमः ॥ सर्वकलहहर्त्रे नमः ॥
सर्वमोक्षदाय नमः ॥ सर्वसुखदाय नमः ॥
सर्वसौख्यदाय नमः ॥ सर्वसन्तोषदाय नमः ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय नमः ॥ सर्वसन्निभाय नमः ॥
सर्वसमर्पणाय नमः ॥ सर्वसमर्पणाय नमः ॥
सर्वसमर्पणाय नमः ॥ सर्वसमर्पणाय नमः ॥

[illegible][illegible]